दिसम्बर 2004
Rs. 12 /-
चन्दामामा
इस अंक में
देखिए जी-मैन के
कारनामे
G-man

LOOKING FOR AN IDEAL NEW YEAR GIFT FOR YOUR DEAR ONES?

HERE ARE EDUTAINMENT PRODUCTS FROM THE HOUSE OF CHANDAMAMA

With a simple click and drag movement of the mouse, Chandamama Fun Workshop promises hours of fun.

We have over a half-million words in English to communicate with, but half of everything we write and read depends on 300 most frequently used words. But many of these words cannot be sounded out, so they must be learned as sight words. What exactly are "sight words?" - the, a, is, of, to, in, and, I, you - are just a few. Words that good readers instantly recognise.

JATAKA TALES - Early Reader Series (Level 2) teaches children to instantly recognise 100 of these sight words.

The renowned indologist Professor Purenuthin is trapped inside the Mound of Murukki. You search through 12 different games and activities to find clues and keys to save the professor.

For more details, Contact :
Mr. Shivaji, Chandamama India Limited, 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai 600 097. INDIA. Ph: +91-44-22313637 / 22347399.
e-mail: support@chandamama.org WWW: http://www.chandamama.org

HURRY!

Cream Biscuits

What games are the Fun Centre sporty characters playing?

Bourbon

Butterscotch

G	N	I	L	C	Y	C	C	O	Y
I	N	G	F	O	L	C	A	B	E
F	O	O	T	B	A	L	L	I	T
L	O	P	E	S	T	M	I	N	Z
Q	U	G	N	I	T	A	K	S	T
L	M	C	N	D	A	G	H	I	B
A	C	R	I	C	K	E	T	L	C
P	Q	E	S	M	O	C	E	T	E
A	S	T	E	R	B	I	N	T	E
B	A	S	K	E	T	B	A	L	L

Strawberry

Milk

Unscramble these words to find the new exciting flavours of Parle Fun Center

Enlarge the drawing in the space provided below.
R B N
O B T S U C E C
S A B Y T E
PARLE
Fun Center
Bourbon

सम्पुट - १०८ दिसम्बर २००४ संचिका - १२

विशेष आकर्षण
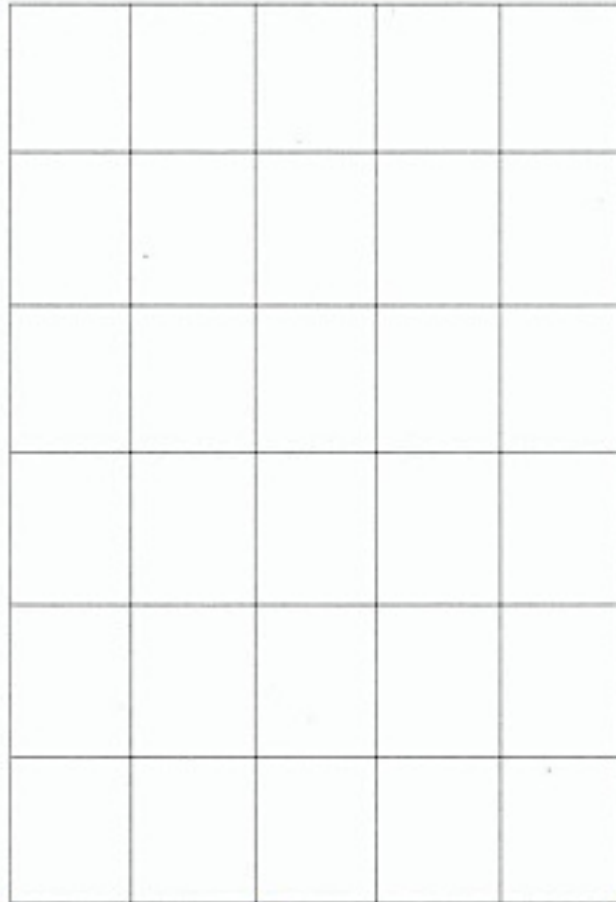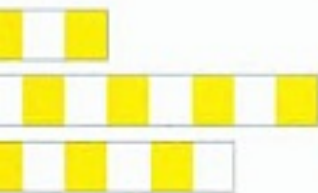
भल्लूक मांत्रिक १३

चंदन का ऋण १९

अन्यदेशों की अनुश्रुत कथाएँ (इराक) ...२५

विष्णु पुराण ४९

अंतरंग

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

शिक्षा पर बल

यह पता लगाने के लिए कि कौनसे अन्तर्राष्ट्रीय दिवस प्रायः दिसम्बर में मनाये जाते हैं, हमने अपना पंचांग देखा। विश्व एड्स दिवस के बाद दासता-उन्मूलन दिवस मनाया जाता है। एक दिवस विकलांग व्यक्तियों के लिए निवेदित है, फिर एक है मानवाधिकार दिवस, और अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासी दिवस।

इन सभी दिवसों का एक समान उद्देश्य होता है- कम से कम सुविधा के साथ एक सम्मानित जीवन यापन के लिए प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार को बनाये रखना, ताके हर दिन के अन्त में एक सुखद अनुभूति हो, साथ में यह सन्तुष्टि भी हो कि उनके परिजन भी सुख-शान्ति में हैं।

निस्सन्देह ऐसी आदर्श स्थिति रातों रात नहीं बन जाती। स्वभावतः ही, समान विचार धारा के लोग सरकार और इसके सामाजिक कल्याण विभागों के प्रयासों की कमी को पूरा करने के लिए संगठनों का निर्माण करते हैं।

ऐसे अधिकांश संगठनों की शुरुआत आधारभूत कल्याण कार्यक्रम से होती है जिसमें ऐसे बच्चों की प्राथमिक शिक्षा को सुनिश्चित किया जाता है जो अनेक कारणों से सामान्य विद्यालयों में शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं हो सकते। यदि ऐसे बच्चों को शिक्षा दी जाती, तो आधी लड़ाई जीत ली गई होती।

ऐसे अनेक संगठन हैं जिनकी शुरुआत बड़ी साधारण थी, लेकिन वे द्रुत प्रगति का आनन्द ले रहे हैं। कारणः उन्होंने ऐसे क्षेत्रोंका चुनाव किया जो अब तक अछूते थे।

वर्ष के समापन के साथ आयें, और हम सब मिल कर संकल्प लें कि हम में से प्रत्येक यह सुनिश्चित करे कि ''प्रत्येक बालक/बालिका स्कूल जाये और अच्छी तरह शिक्षा प्राप्त करे।''

सम्पादकःविश्वम

दुखी राजबंधु

बहुत पहले की बात है। बिशाल देश की राजधानी से बहुत दूर स्थित महानगर आदर्श नगर माना जाता था। देश में कहीं भी अकाल पड़ जाए पर महानगर सदा सुभिक्ष रहता था। कुछ लोगों का कहना था कि वहाँ की भूमि उपजाऊ है। कुछ और लोग कहा करते थे कि बहाँ के निबासी उत्तम नागरिक हैं। लेकिन बहुत-से लोग ज़ोर देकर कहते थे कि इसका सारा श्रेय नगरपाल हेमशंकर को मिलना चाहिये।

हेमशंकर ने सभी शास्त्रों का गहरा अध्ययन किया था। आडंबरहीन जीवन बिताना उसे बहुत पसंद था। उसके रहने के लिए राजभवन था, पर बह बहाँ न रहकर नागरिकों के बीचों-बीच एक झोंपड़ी में अपने परिवार के साथ रहता था। नगर पालन से संबंधित कार्यों से निपटने के लिए ही बह दिन में बहाँ जाता था। बह आम लोगों से हिल-मिल जाता था और उनकी समस्याओं की जानकारी पाता था। फिर उन समस्याओं के परिष्कार के मार्ग भी ढूँढ़ता था।

नगर के सबके सब लोग हेमशंकर को बेहद चाहते थे। परंतु, राजबंधु मात्र ही एक आदमी था, जो उससे ईर्ष्या करता था। नाम के अनुरूप ही वह राजा के दूर का रिश्तेदार था। वह बहुत ही संपन्न था। इतना संपन्न कि पीढ़ी दर पीढ़ी आराम से बैठकर खायें तब भी, उसकी संपत्ति नहीं घटती। पर यह चिंता उसे खाये जाती थी कि इतना संपन्न होते हुए भी समाज में उसकी कोई प्रतिष्ठा नहीं है। लोग उसे संपन्न मात्र मानते थे, पर प्रतिष्ठित व्यक्ति नहीं।

राजबंधु की पत्नी का नाम था, रानीबंधु। बह रानी की दूर की रिश्तेदार थी। एक दिन पति-पत्नी के बीच में प्रतिष्ठा और यश को लेकर चर्चा हुई। दोनों ने बहुत सोचा कि प्रतिष्ठा और यश पाने के लिए क्या करें।

दानी शिवि, ययाति, बलि सबके सब चक्रवर्ती थे। असमान दानी कर्ण भी प्रतिष्ठित

और यशस्वी माना गया, जब वह अंगराज घोषित हुआ। इसका यह मतलब हुआ कि प्रतिष्ठा और यश पद से जुड़े हुए हैं। थोड़ी देर तक सोचने के बाद रानीबंधु ने पूछा, ''कोई रानी जब कहलाती है, तभी लोग उसका आदर करने लगते हैं। पर क्या ऐसे लोग भी नहीं हैं, जिन्होंने पद के बिना ही नाम कमाया?''

इसपर राजबंधु ने हँसकर कहा, ''स्वयं जो प्रतिभावान होते हैं, वे बिना किसी पद के भी नाम कमाते हैं। हम स्वयं प्रतिभावान हैं, पर हम महानुभाव नहीं हैं। हम जैसों का आदर होना हो, प्रसिद्ध होना हो तो पद का होना नितांत आवश्यक है। इसलिए हम तुरंत राजा और रानी से मिलेंगे और उनसे प्रार्थना करेंगे कि मेरी नियुक्ति नगरपाल के पद पर हो। मुझे पूरा विश्वास है कि वे हमारी प्रार्थना को अस्वीकार नहीं करेंगे।'' दोनों राजधानी गये और राजा-रानी से मिले।

उनकी इच्छा सुनकर राजा कुछ देर तक सोच में पड़ गया। फिर अपने को संभालते हुए उसने कहा, ''तुम्हें नगरपाल बनाने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। परंतु, महानगर आदर्श नगर माना जाता है। दिन ब दिन उसकी चतुर्मुखी वृद्धि होती जा रही है। सबका यही कहना कि इसके मूल में नगरपाल हेमशंकर हैं। उसे पद से हटाना न्यायसंगत नहीं होगा न?''

राजबंधु ने कहा, ''प्रभु, महानगर सुभिक्ष व सुसंपन्न है, उसका कारण है, वहाँ के नागरिकों का सम्मिलित परिश्रम। इसे नज़रअंदाज़ करते

हुए सब के सब हेमशंकर की प्रशंसा के पुल बाँध रहे हैं। वह प्रशंसा उस पराकाष्ठा तक पहुँच गयी है जहाँ लोग अब यह भी कहने लगे हैं कि हेमशंकर स्वयं विशालदेश का राजा बन जाए तो अच्छा होगा। उसके यश पर नियंत्रण न रखा जाए तो आपका सिंहासन मुसीबत में पड़ जायेगा।''

उस समय तक राजा को इस बात की आशंका नहीं थी कि हेमशंकर के कारण उसका सिंहासन ही हिल जायेगा। राजबंधु की चेतावनी ने उसके मन को झकझोर दिया।

खूब सोचने के बाद रानी और राजा को एक उपाय सूझा। उन्होंने तुरंत एक दूत को महानगर भेजा। उस दूत ने हेमशंकर से कहा, ''आपके नगर पालन की अवधि में महानगर की कितनी ही प्रगति हुई। महाराज चाहते हैं कि पूरे देश की

भी ऐसी ही प्रगति हो। इस काम में वे आपकी सहायता चाहते हैं। आप राजा के सलाहकार होंगे। आपकी जगह पर राजबंधु यहाँ के नगरपाल होंगे।''

यों राजबंधु महानगर का नगरपाल बना। उसने ऐसे लोगों को नियुक्त किया, जो हमेशा उसकी तारीफ करते थकते नहीं थे। उनके द्वारा अपने बारे में प्रचार कराने लगा। इस से उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी, जिसकी उसे कभी उम्मीद नहीं थी।

हेमशंकर भी राजा के आदेशानुसार राजधानी पहुँचा। अनेक क्षेत्रों में वह राजा को सलाह देने लगा और वे अमल में लायी जाने लगीं। इस से विशालदेश सुभिक्ष व सुसंपन्न बन गया।

दो सालों के बाद महानगर में भयंकर अकाल पड़ा। जो नगर अब तक सुभिक्ष व सुसंपन्न था, जहाँ के लोग आराम से ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, वहाँ अब हाय- हाय मच गयी। आहार की बात तो दूर, पीने के लिए पानी भी नहीं था। राजा को जब महानगर के नागरिकों की दुस्थिति का पता चला तो उसने हेमशंकर को वहाँ भेजा और यह जानने का आदेश दिया कि ऐसी गंभीर दुस्थिति के पीछे क्या कारण है।

उस समय मंत्रियों ने राजा से कहा, ''अब पूरा देश सुसंपन्न है, सुखी है, पर महानगर अकाल से पीड़ित है। हेमशंकर के शासनकाल में वहाँ सब कुछ ठीक था। यद्यपि उसकी सलाहों के कारण पूरा देश सुसंपन्न है लेकिन उसके न होने के कारण वहाँ महानगर को कष्ट पहुँचा। आपको कोई ऐसा क़दम उठाना चाहिये, जिससे महानगर का पुनरुद्धार हो और इस पूरे देश का भी भला हो।''

राजा ने ''न'' के भाव में सिर हिलाते हुए कहा, ''आप लोगों की सोच में कहीं कोई लोप है। हेमशंकर की वजह से देश का भला होगा तो फिर महानगर का भला क्योंकर नहीं होगा? आख़िर महानगर भी तो देश का ही एक हिस्सा है।''

मंत्रियों ने फ़ौरन कहा, ''आपके इस सवाल का जवाब महानगरपाल राजबंधु को ही बताना होगा। आपको जानना होगा कि उसने आपके आदेशों का ठीक तरह से पालन किया या नहीं।''

राजा को लगा कि मंत्रियों की बातों में सच्चाई है। तत्संबंधी सच्चाइयों को जानने के लिए वह खुद महानगर गया। वहाँ पहुँचने के बाद वहाँ की

हालत देखकर राजा बहुत दुखी हुआ। धरती पर स्वर्ग कहलाये जानेवाले महानगर की इस दुस्थिति को देखकर राजा कराह उठा। उसने देखा कि ग़रीब बेरोज़गार हैं, संपन्नों को चोरों का डर है, वहाँ लोग रोगों से पीडित हैं। यह सब देखने के बाद जब राजा ने नगर में प्रवेश किया तब राजबंधु ने उसका भव्य स्वागत लिया और अपने आदमियों से राजा की वाहवाही करवायी।

राजभवन पहुँचने के बाद, राजबंधु और हेमशंकर राजा से मिले। हेमशंकर ने राजा से कहा, ''प्रभु, कुछ समय से यहाँ बहुत बड़ी मात्रा में अनीति फैली है। स्वार्थी शासन के कामों को संभाल रहे हैं। इनकी ही वजह से यह महानगर बरबाद हो गया। दो सालों तक महानगर का शासन भार संभालने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी जाए तो इस नगर को प्रगति के मार्ग में ले जाऊँगा और पूर्ववत् इसे शोभायमान बना दूँगा।''

तब राजबंधु ने अपनी तरफ़ से सफाई देते हुए कहा, ''राजन्, सब दिन एक समान नहीं होते। नगर की इस दुस्थिति का कारण अनैतिक अधिकारी नहीं हैं। यह तो केवल दैव लीला मात्र है। मुझे सिर्फ़ दो महीनों का समय दीजिए। इसका कायापलट कर दूँगा।''

राजा ने, राजबंधु को एक बार ग़ौर से देखा और फिर हेमशंकर की ओर मुडकर उससे पूछा, ''मैं राजबंधु की बातों का विश्वास करूँ या तुम्हारी बातों का?''

बड़े ही विनय के साथ जवाब में हेमशंकर ने

कहा, ''प्रभु, राजबंधु झूठ नहीं बोल रहे हैं। परंतु उन दिनों मैं जनता के बीच में रहता था। अब ये राजभवन में रह रहे हैं। प्रजा मुझसे जिस प्रकार से अपनी समस्याएँ बताती थीं वैसे इनसे वे नहीं बतायेंगी। इसलिए ये उनकी पूरी जानकारी नहीं रखते। वास्तविकताओं से वे अपरिचित हैं।''

राजबंधु ने इसके विरोध में कहा, ''प्रभु, मैं साबित कर सकता हूँ कि जनता और मेरे बीच में कोई दूरी नहीं हैं। इस सच्चाई को जानने के लिए एक मार्ग है। हम दोनों नगर के सब प्रकार के लोगों से मिलेंगे और वास्तविकता जानेंगे।''

राजा ने कहा, ''ठीक है, बहुरूपिया बनकर मैं तुम्हारे साथ आऊँगा। फिर इसके बाद हेमशंकर के साथ जाकर लोगों से मिलूँगा।''

तदनुसार बहुरूपिये के वेष में राजा और

राजबंधु नगर की ओर बढ़े। वे पहले एक धनिक के घर गये। हाल ही में उसके घर चोरी हुई थी और चोर लाख अशर्फियाँ लेकर भाग गये थे। जब धनिक के बेटे ने चोरों को रोकने की कोशिश की तो उन्होंने उसे खूब पीटा और घायल भी किया। धनी व उसका परिवार राजबंधु के पैर पर गिरकर बिलख-बिलख कर रोने लगा। घर की औरतों को सान्त्वना देते हुए राजबंधु भी रो पड़ा।

घर से बाहर आते ही राजबंधु ने, राजा से कहा, ''देखा महाराज, जनता मेरा कितना आदर करती है। उनसे बातें करते हुए मैं अपने दुख पर काबू रख नहीं पाया। अब आप ही सोचिये, लोग मेरे कितने क़रीब हैं।''

फिर इसके बाद उन्होंने दो और धनिकों, मध्यवर्ग के चार सदस्यों और पांच ग़रीबों से मिलकर बातें कीं। सब जगहों पर वही हुआ।

शाम को राजा, हेमशंकर के साथ मिलकर नगर के एक और भाग में गये। वहाँ भी सब वर्गों के लोगों की स्थिति दयनीय थी। पर, हेमशंकर ने उनसे बडे प्यार से बातें कीं और उनके कष्टों को श्रद्धापूर्वक सुना। साथ ही तत्संबंधी और विवरणों के लिए कई सवाल भी पूछे।

राजभवन लौटने के बाद राजा ने हेमशंकर से कहा, ''नगरवासियों की स्थिति बड़ी ही गंभीर है। उन्हें देखते ही राजबंधु बिलखकर रो पड़ा। परंतु आप को थोड़ा भी दुख नहीं हुआ।''

हेमशंकर ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''प्रभु, अवश्य ही मुझे दुख हुआ। पर मैंने अपने को नियंत्रण में रखा। हम शासक हैं। किसी भी स्थिति में जनता के सम्मुख अनाथों की तरह आंसू बहाना अनुचित है। इससे दूसरों की आंखों से हम गिर जाते हैं। लोगों से पूछताछ के बाद मैंने जाना कि शासन पद्धति बिल्कुल बरबाद हो गयी है और अधिकारी इसके जिम्मेदार हैं। आपने भी तो सुना है। अब हमें इसका परिष्कार मार्ग ढूँढ़ना होगा।''

हेमशंकर का उत्तर सुनने के बाद राजा ने और ज्यादा नहीं सोचा। उसने तुरंत हेमशंकर को नगरपाल पद पर नियुक्त किया और राजबंधु को अपना सलाहकार बनाया।

भल्लूक मांत्रिक

14

भल्लूक मांत्रिक तथा कालीवर्मा माया मर्कट का पीछा करते क़िले के पास पहुँचे। बधिक भल्लूक ने उन्हें क़िले के भीतर की लड़ाई का समाचार सुनाया। राजा जितकेतु का मंत्री जीवगुप्त ने वहाँ पहुँच कर एक सैनिक को कालीवर्मा के पास भेजा। इस बीच डाकू नागमल्ल और उसके अनुचरों ने क़िले के दर्वाजों पर आग लगाई। इसके बाद...)

किले के दर्वाजे जलकर भस्म हो गये। इसे देख बधिक भल्लूक दौड़कर कटी सूंडवाले हाथी पर सवार हो वहाँ पर आ पहुँचा, तब बोला, ‘‘कालीवर्मा साहब, अब हम किले के भीतर प्रवेश करेंगे। वहाँ पर माया मर्कट ज़रूर हमारे हाथ लगेगा।’’ यों कहकर जलनेवाली लकड़ियाँ हाथ में ले उछल-कूद करनेवाले जंगली नौकर से बोला, ‘‘अरे जंगली सेवक! तुम जल्दी यहाँ आओ और इस हाथी को क़िले के भीतर ले चलो।’’

जंगली सेवक ने जलती लकड़ी को दूर फेंक दिया, डाकुओं के नेता नागमल्ल को सचेत कर बोला, ‘‘भल्लूक साहब,लो, मैं अभी पहुँचा।’’ यों कहकर वह हाथी की ओर बढ़ने ही वाला था, तब नागमल्ल ने उसे हाथ के इशारे से रोककर कहा, ‘‘यहाँ पर मेरे और मेरे अनुचरों के लिए काम ही क्या रह गया है? हम अपने रास्ते जंगल में जाकर फिर से अपना धंधा शुरू करेंगे।’’

क़िले के दर्वाजों के समीप पहुँचनेवाला

कालीवर्मा ये बातें सुन एक दम नाराज़ हो गया, नागमल्ल की ओर क्रोध भरी दृष्टि से देख तलवार का निशाना करके बोला, ''अबे जंगली लुटेरे! तुमने आखिरी क्षणों में राह लूटकर जीने की अपनी कुबुद्धि का परिचय दे ही दिया है। टोह लगाकर बेहथियार मुसाफ़िरों को सिर्फ़ लूटना जानते हो तुम लोग; मगर शत्रु का सामना कर हिम्मत के साथ लड़ने का साहस क्या तुम नहीं रखते?''

इस पर डाकू नागमल्ल ने एक बार सब की ओर खीझ भरी दृष्टि दौड़ाकर कहा, ''मैं जन्म से ही डाकू हूँ। अपना पेट भरने के लिए जिसके पास धन मिल सकता है, मैं उन्हें लूट लेता हूँ। अब क़िले के भीतर चाहे राजा दुर्मुख जीत जाये या सामंत भूपति, मेरा बनता बिगड़ता ही क्या है?''

भल्लूक मांत्रिक ने भाँप लिया कि नागमल्ल उसकी सहायता करने के एवज में उचित धन पाने के वास्ते ही, यों घुमा-फिराकर जवाब दे रहा है। इस ख़्याल से उसने अपनी तलवार नागमल्ल के कंधे पर टिकाकर उच्च स्वर में कहा, ''अबे नागमल्ल! इस तलवार में मंत्र की शक्तियाँ नहीं हैं, अगर यही मेरा मंत्र-दण्ड होता तो तुम्हें अब तक एक सियार के रूप में बदल देता। राजा दुर्मुख को छोड़ कोई दूसरा अब विजयी होगा तो वह जंगल के खूँख्वार जानवरों जैसा ही तुम्हारा शिकार खेलेगा। क्या तुम यह बात भी भाँप नहीं पाये? तुम तो निरे जंगली ठहरे।''

ये बातें सुनने पर नागमल्ल को लगा कि उस राजा दुर्मुख के पक्ष का समर्थन करना उचित है।

यों सोचकर नागमल्ल अपने दोनों अनुचरों की ओर मुड़कर बोला, ''अबे सुनो, आज से हमें जंगलों को छानने के काम से छुट्टी मिल जाएगी। हम लोग अगर राजा दुर्मुख के पक्ष में रहकर दुश्मन का संहार करेंगे तो वे विजयी होने के बाद हमें अपनी सेना में नौकरी ज़रूर देंगे।''

अपने नेता के मुँह से यह ख़बर सुन कर दोनों डाकू अपनी तलवारें उठाकर चिल्ला उठे, ''महाराजा दुर्मुख की जय!''

भल्लूक मांत्रिक और कालीवर्मा अपने वाहनों पर सवार हुए और बधिक भल्लूक से बोले, ''हम लोग कुल मिलाकर दस आदमी भी नहीं हैं। हमारा मुख्य कार्य माया मर्कट के रूप में स्थित व्यक्ति से मंत्र दण्ड को हथियाना है। इसके बाद राजा दुर्मुख के प्राणों की रक्षा करनी है। इस वास्ते तुम

लोगों में से प्रत्येक को अपने साहस और त्याग का परिचय देना होगा।''

सब ने हथियार उठाकर नारे लगाये, ''कालीवर्मा की जय!''

कालीवर्मा घोड़े पर सवार हो आगे रह कर क़िले के भीतर बढ़ने लगा। हठात् किसी बात की याद करके घोड़े को पीछे घुमाकर बोला, ''राक्षस उग्रदण्ड कहाँ पर है?''

उस वक़्त उग्रदण्ड एक हाथी की सूंड पकड़कर चलते हुए दूर पर खड़े राजा जितकेतु के मंत्री जीवगुप्त की ओर बढ़ रहा था।

इसे देख कालीवर्मा विस्मय में आ गया और भल्लूक मांत्रिक से बोला, ''गुरुजी! ऐसा लगता है कि यह राक्षस जितकेतु के पक्ष में मिलने जा रहा है।''

''ऐसा कभी नहीं हो सकता। मुझे मालूम हुआ कि मेरे साथ उसका अपना कोई व्यक्तिगत काम है। तुम तुरंत जाकर पता लगाओ कि बात क्या है?'' भल्लूक मांत्रिक ने सुझाया।

ये बातें सुनते ही बधिक भल्लूक एक दूसरे हाथी पर सवार राजा दुर्मुख के अंग रक्षकों से बोला, ''अरे अंग रक्षको! वह राक्षस शायद कालीवर्मा साहेब पर धोखे से टूट न पड़े, हम सावधान होकर हाथियों समेत उनकी रक्षा के लिए पीछे-पीछे चलेंगे।'' इन शब्दों के साथ उसने एक जंगली व्यक्ति को आदेश दिया और तब अपने हाथी को कालीवर्मा के घोड़े के पीछे बढ़ाया।
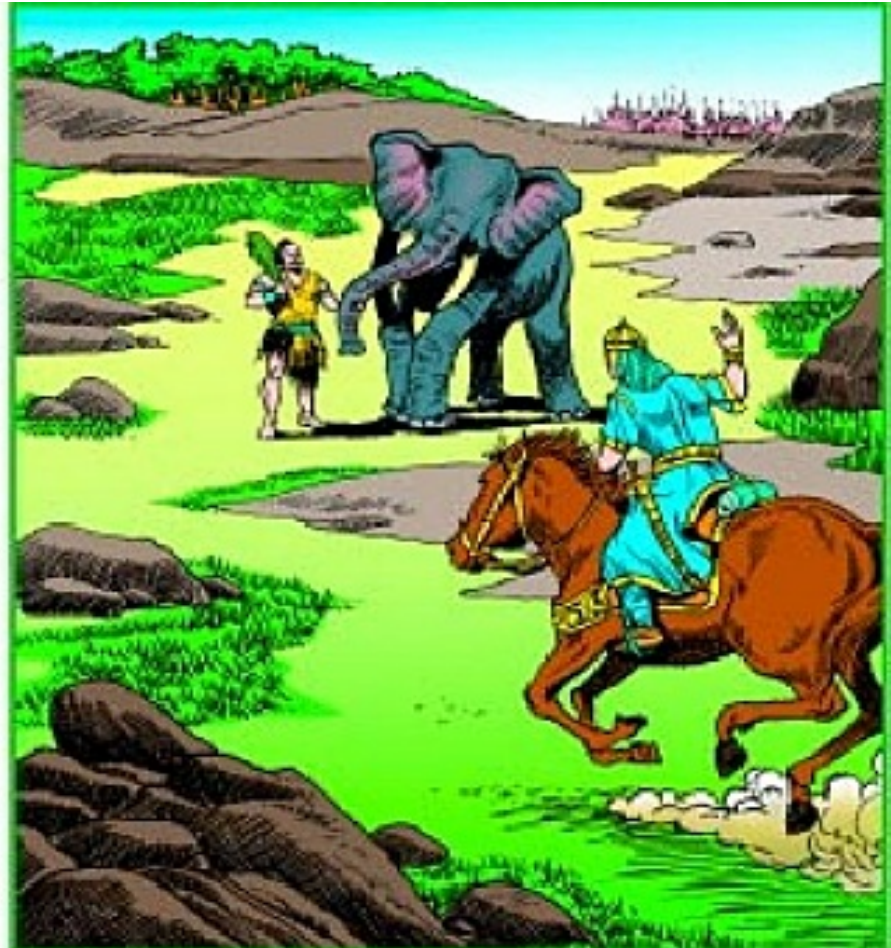
घोड़े पर कालीवर्मा तथा हाथियों पर बधिक भल्लूक तथा अंग रक्षकों को उसकी ओर बढ़ते देख राक्षस उग्रदण्ड पल भर के लिए चकित रह गया, फिर सावधानी हेतु अपने पत्थरवाले गदे को ऊपर उठाया, हाथी की सूंड पकड़कर खींचते हुए उनकी ओर घुमाकर तनकर खड़ा हो गया।

कालीवर्मा उग्रदण्ड के समीप पहुँचते ही बोला, ''उग्रदण्ड, यह क्या है? हमने सोचा था कि तुम हमारे साथ क़िले में चलकर सामंत भूपति से राजा दुर्मुख की रक्षा करोगे?''

''कालीवर्मा, क्या तुम्हारा विश्वास है कि अभी तक राजा दुर्मुख ज़िंदा है?'' उग्रदण्ड ने पूछा।

''तुम्हारे मन में यह संदेह ही क्यों पैदा हुआ कि दुर्मुख अपने प्राण अब तक खो बैठा होगा? क्या तुम नहीं जानते कि क़िले के भीतर कुछ

सैनिक दुर्मुख की ओर से भी लड़ते हैं? ऐसी बात अगर नहीं है तो युद्ध का यह कोलाहल ही हमें क्यों सुनाई देता?''

राक्षस उग्रदण्ड दूर पर खड़े मंत्री जीवगुप्त के सैनिकों की ओर हाथ का इशारा करके बोला, ''कालीवर्मा, तुम सब क़िले के दर्वाजे पर नाहक़ बातें बनाते हुए वक़्त बर्बाद करते हो? अब भी कोई बात नहीं, तुम लोग जल्दी क़िले के भीतर घुस आओ और राजा दुर्मुख की रक्षा करने के साथ माया मर्कट से मंत्र दण्ड को प्राप्त कर लो।''

''हम तो यही काम करने जा रहे हैं। मगर तुम इस हाथी को लेकर जाते कहाँ हो?'' कालीवर्मा ने पूछा।

राक्षस उग्रदण्ड पत्थरवाले गदे को जीवगुप्त की ओर हिलाकर बोला, ''मंत्री जीवगुप्त और उसके सैनिक पीछे से क़िले में घुसकर तुम लोगों का अंत न कर दें इसलिए मैं उन्हें रोकने जा रहा हूँ।''

ये बातें सुन कालीवर्मा संतुष्ट हुआ और बधिक भल्लूक आदि के साथ वह क़िले के दर्वाजे के पास लौट आया। इसके बाद सब भयंकर ध्वनि करते दुर्ग में पहुँचे। दो हाथियों पर तलवार और फरसे लेकर कुछ लोग सवार हुए, लेकिन एक घोड़े पर कालीवर्मा, भैंसे पर भल्लूक मांत्रिक और उनके पीछे हंगामा करते डाकू नागमल्ल और उसके अनुचरों को क़िले में प्रवेश करते देख सामंत के सैनिक भय कंपित हो उठे और घबराकर सूर्य भूपति से बोले, ''महाराज, भल्लूक मांत्रिक हाथियों के दल के साथ प्रवेश कर रहा है। फिलहाल यहाँ से हमारा भाग जाना उचित होगा।''

दूसरे ही क्षण एक छोटी-सी इमारत के पीछे से सामंत सूर्य भूपति खून से सनी तलवार के साथ आगे बढ़कर बोला, ''अरे सैनिको, तुम लोग डरो मत! दुर्मुख के पक्ष में लड़नेवाले सभी लोगों को लगभग हमने मार डाला है। यह भल्लूक मांत्रिक हमारा क्या बिगाड़ सकता है? मर्कट के रूप में हमारे पक्ष में लड़नेवाला व्यक्ति भल्लूक मांत्रिक से भी ज़्यादा मंत्र-शक्तियाँ रखता है।''

सामंत को देखते ही कालीवर्मा दांत भींचते ललकार उठा-''अरे कायर सामंत, तुम क्या बंदरों की मदद से लड़ाई जीतना चाहते हो? राजा दुर्मुख कहाँ है? जल्दी बताओ! मैं उसी के हाथों से खुद तुम्हारा सर कटवाने जा रहा हूँ!''

उसी वक़्त इस इमारत की छोटी दीवार पर

माया मर्कट उछलकर आ बैठा और किचकिच करने लगा। सब ने सर उठाकर उसकी ओर देखा। मर्कट के दायें हाथ में मंत्र दण्ड झूल रहा था। बायें हाथ में एक कटे-सिर के केश पकड़कर हिलाते हुए बोला, "हे कालीबर्मा! तुमने राजा दुर्मुख का पता पूछा था न? लो, यही उसका कटा हुआ सिर है। तुम जब तक उसके धड़ की खोज करोगे, तब तक तुम्हारा सिर भी इसी प्रकार सूर्य भूपति की तलवार से कटकर जमीन पर लोट जाएगा।"

दूसरे ही क्षण भल्लूक मांत्रिक तलवार खींचकर अपने भैंसे के वाहन को आगे बढ़ाते बोला, "अरे मर्कट के रूप में दुष्ट भ्रांतिमति! तुम यह सोचकर खुश न हो जाओ कि तुमने मेरे मंत्र दण्ड को चुरा लिया है। यह खड्ग किसी भी हालत में उसकी तुलना में कम नहीं है। क्या तुम्हारे गुरु तांत्रिक मिथ्या मिश्र भी ब्रह्मपुत्र नदी के प्रदेश को छोड़ इन जंगलों की खाक छान रहे हैं?"

इन बातों के उत्तर के रूप में माया मर्कट परिहासपूर्वक किचकिच करके बोला, "अरे भल्लूक मांत्रिक! तुम क्या अपनी मंत्र शक्ति के बल पर अंजन लगाकर क्या मेरे गुरु का पता नहीं लगा सकते? शायद वे तुम्हारे गुरु भल्लूकपाद का सर काटने के लिए हिमशिलाओं पर अपनी तलवार पर सान चढ़ाते होंगे।"

ये शब्द सुनकर भल्लूक मांत्रिक क्रोध के मारे कांप उठा और दांत पीसते बोला, "हे मेरे शिष्य कालीबर्मा! बधिक भल्लूक ! तुम लोग ऐसा पहरा बिठा दो जिससे इस क़िले में से सामंत के पक्ष का एक भी सैनिक अपनी जान बचाकर भागने न पावे, हो सके तो इस माया मर्कट तथा सामंत को प्राणों के साथ बन्दी बनाकर इनकी बोटी-बोटी काट डालो।"

मांत्रिक के मुँह से ये बातें समाप्त न हुई थीं, तभी बधिक भल्लूक के हाथी पर सवार जंगली व्यक्ति का तीर तेजी से जाकर माया मर्कट के उस हाथ पर लगा, जिसमें वह कटा सिर पकड़े हुए था। बाण के लगते ही पीड़ा के मारे माया मर्कट चीख़ उठा और उसके हाथ का सिर फिसलकर दूर जा गिरा।

सिर के नीचे गिरते ही दूसरे हाथी पर सवार राजा दुर्मुख के दोनों अंग रक्षक नीचे कूदकर दौड़ पड़े और उस सिर की जांच कर बोले, "यह तो राजा दुर्मुख का सर नहीं है। यह माया मर्कट हमें दगा देना चाहता है।"

दूसरे ही क्षण में बधिक भल्लूक, "सिरस भैरव!" चिल्लाकर फरसा उठाते हुए बोला, "अरे जंगली सेवक! तुमने माया मर्कट पर तीर चलाकर अद्भुत कार्य पर डाला। हम लोग राजा दुर्मुख की खोज करने इस सारे क़िले को छानने जा रहे हैं। जो लोग मेरे परशु की बलि न होंगे, उन्हें तुम अपने बाणों से मारकर परलोक में भेज दो।" यों सचेत कर उसने हाथी के मस्तक पर फरसे की मूठ से मारा।

हाथी जोर से चिंघाड़ उठा। इस बीच माया मर्कट छोटी दीवार पर से कूदकर कहीं गायब हो गया। इस पर कालीवर्मा भल्लूक मांत्रिक से बोला, "गुरुजी! हमें सबसे पहले सामंत सूर्य भूपति और उसके सैनिक को मार भगाना होगा। मेरा विश्वास है कि राजा दुर्मुख इस क़िले में कहीं प्राणों के साथ ज़रूर होगा।"

तब तक सामंत के सैनिकों से भगाये जाकर इधर-उधर छिपे बैठे राजा दुर्मुख के सैनिक मांत्रिक के पास दौड़े-दौड़े आ पहुँचे और बोले, "महाशय! हमारे राजा दुश्मन से डरकर सभा मण्डप के सिंहासन वाले कमरे में छिपे बैठे हैं।"

"तब तो तुम लोग आगे-आगे चलते रास्ता बता दो। दुश्मन की बात हम देख लेंगे।" कालीवर्मा ने हिम्मत बंधाई।
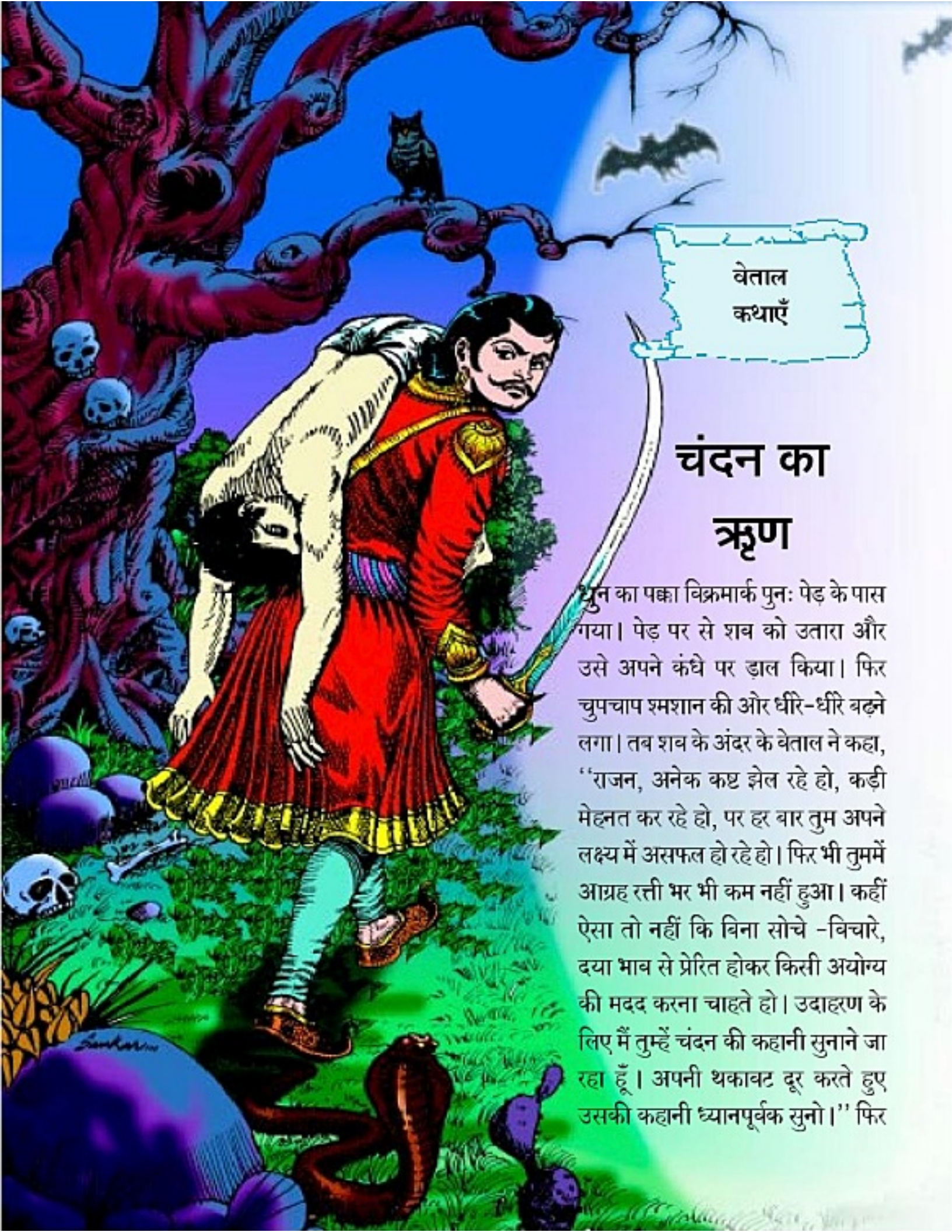
कालीवर्मा और भल्लूक मांत्रिक सभा मण्डप के समीप पहुँचने जा रहे थे, तभी बधिक भल्लूक हाथी पर वहाँ आ पहुँचा। इसके दूसरे ही क्षण सभा मण्डप में सिंहासनवाले कमरे के द्वार खुल गये। सबने आश्चर्य के साथ देखा कि राजा दुर्मुख सिंहासन पर बैठा हुआ है।

सभी लोग चकित थे, तभी राजा दुर्मुख अपना हाथ उठाकर बोला, "हे बधिक भल्लूक! फिर से एक बार अपने सिंहासन पर बैठने की मेरी इच्छा की पूर्ति हो गई। तुम अब बिना किसी विघ्न के मेरा सर काटकर अपने गुरु के हाथ में सौंप सकते हो। मुझे कोई शिकायत नहीं है।"

दूसरे ही क्षण बधिक भल्लूक उत्साह के साथ अपना परशु उठाकर हाथी पर से कूद पड़ा और सभा मण्डप की ओर दौड़ पड़ा। ***(और है)***

चंदन का ऋण

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर ड़ाल किया। फिर चुपचाप श्मशान की ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन, अनेक कष्ट झेल रहे हो, कड़ी मेहनत कर रहे हो, पर हर बार तुम अपने लक्ष्य में असफल हो रहे हो। फिर भी तुममें आग्रह रत्ती भर भी कम नहीं हुआ। कहीं ऐसा तो नहीं कि बिना सोचे -विचारे, दया भाव से प्रेरित होकर किसी अयोग्य की मदद करना चाहते हो। उदाहरण के लिए मैं तुम्हें चंदन की कहानी सुनाने जा रहा हूँ। अपनी थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी ध्यानपूर्वक सुनो।'' फिर

बेताल चंदन की कहानी यों सुनाने लगाः

भाग्यनाथ, श्वेतास्य नामक गंधर्व राजा के यहाँ काम करता था। उसने सुप्रिया नामक एक अप्सरा से प्रेम किया। सुप्रिया ने उसे दंत से बनी एक सुंदर संदूकची देते हुए कहा, ''श्वेतास्य के कोषागार के कीमती पत्थरों को भरकर इसे मुझे दोगे तो मैं तुमसे बिवाह करूँगी।''

भाग्यनाथ ने, यह बात श्वेतास्य से बतायी। उसने सोच-विचारने के बाद उससे कहा, ''मैं अपने कोषागार के क़ीमती पत्थरों से तुम्हें मारता रहूँगा। जितने पत्थरों की चोटों को तुम सह पाओगे, उतने पत्थर तुम्हारे हो जाएँगे।''

भाग्यनाथ ने शर्त मान ली। परंतु, पहली चोट को भी वह सह नहीं पाया। उससे दर्द सहा नहीं गया और रोक देने की विनती की। तब श्वेतास्य ने हँसते हुए कहा, ''मैं किसी भी हालत में अपनी संपदा किसी के सुपुर्द नहीं करता। तुम्हारा प्रेम अगर सचमुच ही सच्चा होता तो अवश्य ही तुम्हारी मदद करता।''

''तुमने मुझे धोखा दिया। मेरे प्रेम की परीक्षा की यह पद्धति नहीं है। तुम्हारे पत्थर जो दर्द पहुँचाते हैं, वह कोई भी प्रेमी सह नहीं सकता।'' भाग्यनाथ ने दर्द-भरे स्वर में कहा।

श्वेतास्य क्रोधित हो उठा। उसने फ़ौरन कह डाला, ''ग़लती तुम्हारी है और उल्टे मुझे धोखेबाज़ कह रहे हो। मैं क़ीमती पत्थरों से भरकर यह संदूकची तुम्हें दूँगा। जब तक तुम उससे छुटकारा नहीं पाओगे, तब तक इस लोक में तुम्हारे लिए स्थान नहीं है।'' उसने भाग्यनाथ को शाप दिया।

भाग्यनाथ, श्वेतास्य के पैरों पर गिरकर गिडगिडाने लगा, ''इस शाप को सह पाना मेरे लिए संभव नहीं है। मुझे विमुक्ति का मार्ग सुझाइये।''

श्वेतास्य को उसपर दया आ गयी। उसने कहा, ''भू लोक प्रेममय है। वहाँ जाओगे तो ऐसे महान प्रेमी तुम्हें मिलेंगे जो तुम्हें इस शाप से मुक्त कर सकेंगे।''

भाग्यनाथ संदूकची सहित भूलोक आया। बैरागी का बेष धारण कर लिया और सच्चे प्रेमी की खोज में लग गया। वह बहुत दिनों तक घूमता रहा। एक दिन उसे जनकपुर के चंदन के प्रेम के बारे में जानकारी मिली। चंदन खेती का काम करनेवाले राम का आख़िरी बेटा था।

राम हर दिन सबेरे-सबेरे ही खेत चला जाता है। उसके पिता, माँ और पत्नी घर के काम-काज संभालते हैं। राम के बड़े बेटे वीर ने गांव में ही किराने की दुकान खोली। यों उस परिवार के सब लोग कोई न कोई उपयोगी काम करते रहते हैं। परंतु चंदन अव्वल दर्जे का सुस्त है।

शहर के निवासी विशाल नामक एक संपन्न व्यक्ति की इच्छा है कि अपनी बेटी मल्लिका का विवाह वीर से किया जाए। उसके बुलावे पर राम परिवार सहित शहर गया। वीर को मल्लिका अच्छी लगी। विवाह का मुहूर्त भी निश्चित हो गया।

तब चंदन ने, मल्लिका की बहन मनोहरी को देखा। चंदन को वह बहुत पसंद आयी। पर, जब मनोहरी को मालूम हो गया कि चंदन अव्वल दर्जे का सुस्त है, तो वह भूलकर भी उसे देखने नहीं लगी। इससे चंदन ने ठान लिया कि किसी भी हालत में उससे शादी करके ही रहूँगा।

एक दिन एकांत में वह उससे मिला और कहा, ''मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ। क्या तुम्हें मंजूर है?'' मनोहरी ने तुरंत कहा, ''अगर तुम मेरे लिए एक नया घर खरीदकर दोगे तो अवश्य ही तुमसे विवाह करूँगी।'' निःसंकोच उसने कह डाला।

''ठीक है, नया घर खरीदकर दूँगा। तब तक तुम्हें किसी और से शादी करनी नहीं चाहिये,'' चंदन ने शर्त रखी।

''नया घर खरीदने में कितना समय लगेगा, साफ़-साफ़ बता देना,'' मनोहरी ने पूछा।

चंदन ने सोचकर कहा, ''तुम यहीं रहो। अपने दादा से पूछकर जवाब दूँगा।'' ''मेरे लिए घर खरीदने के लिए क्या तुम्हें अपने दादा की अनुमति की ज़रूरत है?'' मनोहरी ने पूछा।

''अनुमति की बात नहीं। इसके लिए मुझे धन राशि की भी ज़रूरत है न?'' चंदन ने कहा।

''ऐसा कदापि नहीं हो सकता। मेरे लिए तुम्हें अपनी मेहनत के धन से घर खरीदना होगा।'' मनोहरी ने कहा।

चंदन पेशोपेश में पड़ गया। तब वह चुप रह गया, पर भाई की शादी के बाद उसने अपना दुखड़ा अपनी भाभी को सुनाया।

चंदन का कहा सुनकर मल्लिका चकित रह गयी। उसे मालूम था कि तीन चार संपन्न युवक उसकी बहन से शादी करने आगे आये, पर उनमें

ने उससे अपनी समस्या सविस्तार बतायी।

प्यार से उसे देखते हुए बैरागी ने कहा, ''वाह, तुम सच्चे प्रेमी हो। मेरे साथ चलो। तीन मुश्किल काम बताऊँगा। उन्हें पूरा करो। एक दिन में ही करोड़पति बन जाओगे।''

चंदन, बैरागी के पीछे-पीछे गया। गाँव के बाहर की एक पहाड़ी गुफ़ा में दोनों ने प्रवेश किया। अंदर अंधेरा ही अंधेरा था। बैरागी ने चंदन से कहा, ''यहाँ पद्मासन लगाकर बैठ जाओ। हनुमान का नाम जपते रहो। क्षण भर के लिए भी बिना सोये पूरा एक दिन गुज़ारो। तब मैं आकर तुम्हें बुलाऊँगा और बताऊँगा कि आगे क्या करना होगा।''

चंदन ने तुरंत दीक्षा शुरू कर दी। उस समय वहाँ उसे विकट अट्टहास सुनायी पड़े। लगता था कि उसे कोई ज़ोर से मार रहा है। फिर भी चंदन पद्मासन लगाकर बैठा रहा। दूसरे दिन जब बैरागी ने अंदर प्रवेश करके उसे बुलाया, तभी उसने आँखें खोलीं।

जैसे ही उसने आँखें खोलीं, गुफ़ा प्रकाश से भर गयी। बैरागी ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा, ''शाबाश, चंदन, शाबाश! सामने की दीवार पर राक्षस की जो तस्वीर है, उसके पास जाओ। वह तस्वीर जो कहेगी, वैसा करना।''

राक्षस की तस्वीर बड़ी ही भयंकर थी। पर निर्भय होकर जब चंदन तस्वीर के निकट गया, वह ज़ोर से हँसती हुई कहने लगी। ''अपना दायाँ हाथ मेरे मुँह में रखो।''

से कोई भी उसे पसंद नहीं आया।

मल्लिका ने यह विषय चंदन से कहा और कहा, ''इससे स्पष्ट हो जाता है कि मल्लिका धन के पीछे पागल नहीं है। तुमसे घर खरीदकर देने को कहा तो इसका यह मतलब हुआ कि वह तुम्हें चाहती है। मेरी बहन से ही शादी करने का निर्णय तुमने ले लिया हो तो तुम्हें मेहनत करके धन कमाना होगा। कोई और रास्ता नहीं दीखता।''

अब चंदन ने ठान लिया कि धन कमाऊँगा, नया घर खरीदकर मनोहरी को दूँगा। अब वह इस सोच में पड़ गया कि धन कमाने का क्या मार्ग है। ठीक इसी समय पर, गंधर्व भाग्यनाथ बैरागी के वेष में आया। उनके घर में उसने स्वादिष्ट भोजन किया और सबको आशीर्वाद दिया। चंदन

बिना संकोच के चंदन ने उस तस्वीर के मुँह में अपना दायाँ हाथ रख दिया। तस्वीर ने अपना मुँह बंद कर लिया। चंदन को लगा कि कोई उसके हाथ को चबा रहा है। उसे बहुत दर्द होने लगा। पर, उसने सह लिया। थोड़ी देर बाद तस्वीर ने मुँह खोलकर कहा, ''मेरे पेट में तुम्हें एक चाभी मिलेगी। उसे मेरी नाभि में रख दो।''

चंदन ने चाभी निकाली और तस्वीर के कहे अनुसार किया। तुरंत गुफा की दीवार बड़ी आवाज़ करती हुई दो भागों में टूट गयी। बैरागी, चंदन दोनों अंदर गये। वहाँ उन्हें लोहे की एक पेटी दिखायी पड़ी। बैरागी ने चंदन से कहा, ''इस पेटी में करोड़ अशर्फ़ियों के मूल्य के रत्न, वज्र आदि हैं। इसका ढक्कन तुम्हें खोलना हो तो तुम जिसे बहुत चाहते हो, उसपर तुम्हें क़सम खानी होगी। अपनी मुट्ठी बंद करके अपना पूरा बल लगाकर पेटी को ज़ोर से धक्का देना होगा। इस प्रयत्न में हो सकता है, तुम्हारी उँगलियाँ टूट जाएँ, रक्त बहे, पर तुम्हें पीछे हटना नहीं चाहिये।''

चंदन ने, मनोहरी पर क़सम खायी, मुट्ठी कसकर बंद की और पेटी को ज़ोर से धक्का दिया। पर ढक्कन नहीं खुला। पर निराश हुए बिना चंदन पाँच छे बार पेटी को हाथों और पाँवों से धक्का देता रहा। उंगलियों में चोट आयी और रक्त बहने लगा। रक्त देखते ही वह बेहोश हो गया। दूसरे ही क्षण पेटी का ढक्कन खुल गया। तब बैरागी, भाग्यनाथ के रूप में बदल गया और उसने चंदन को स्पर्श किया। चंदन को होश आ गया।

भाग्यनाथ ने अपनी कहानी सुनाते हुए कहा, ''बेटे, तुम्हारे प्रेम की वजह से मुझे मुक्ति मिल गयी। प्रतिफल स्वरूप इस पेटी में जो भी संपदा है, तुम्हें दे रहा हूँ।''

उसकी कहानी सुनकर चंदन आश्चर्य में डूब गया। फिर अपने को संभालते हुए उसने पेटी के अंदर झांका। वहाँ उसे फुफकारते हुए सर्प दिखायी पड़े। जब उसने यह बात भाग्यनाथ से बतायी तो उसने कहा, ''पेटी के ढक्कन को खोलने में तुम कामयाब हुए। इसमें अब कोई संदेह नहीं रह गया कि तुम निस्संदेह ही महान प्रेमी हो। पर लगता है कि तुम किसी के ऋणी हो, इसीलिए तुम संपदाएँ देख नहीं पा रहे हो। तुरंत जाओ और अपने परिवार के सब सदस्यों को यहाँ ले आओ।''

थोड़ी देर बाद चंदन के साथ-साथ उसके परिवार के सभी सदस्य भी वहाँ आये। पर उनमें से कोई भी चंदन के ऋण के बारे में बता नहीं सके। भाग्यनाथ ने उनसे कहा, ''आप सब लोग एक एक करके पेटी में झांककर देखो। आपमें से कोई चंदन से बढ़कर प्रेमी हो तो उसे यह संपदा दिखायी पड़ेगी।''

एक- एक करके वीर के सिवा सबने पेटी के अंदर झांककर देखा। उन सबको फुफकारते हुए सर्प ही दिखायी पड़े। पर अंत में जब वीर ने पेटी में झांककर देखा तो उसे सोना, वज्र, रत्न दिखायी पड़े।

भाग्यनाथ ने वीर की प्रशंसा करते हुए कहा, ''तुम लोगों का परिवार मिला-जुला परिवार है। यह संपदा सब की है,'' यह कहकर भाग्यनाथ ग़ायब हो गया।

वेताल ने कहानी सुना चुकने के बाद विक्रमार्क से पूछा, ''राजन्, चंदन मनोहरी को कितना चाहता है, इसे जानने के लिए भाग्यनाथ ने उसकी कठोर परीक्षाएँ लीं। उनसे स्पष्ट है कि चंदन इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण होता आया। ऐसे समय पर, उसे पेटी में फुफकारते हुए सर्पों का दिखना और वीर को करोड़ के मूल्य की संपदा का दिखना क्या असंगत व अटपटा नहीं लगता? कहीं ऐसा तो नहीं कि गंधर्व ने मायाजाल का प्रयोग किया हो? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी मौन रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''जो हुआ है, उसमें असम्बद्धता, असंगति या अटपटापन के लिए कोई गुंजाइश ही नहीं है। प्रेम जिससे किया जाता है, उसके लिए प्राण भी त्याग करने के लिए सन्नद्ध प्रेमियों से भी उत्तम व श्रेष्ठ वे होते हैं, जो अपने परिवार की जिम्मेदारियों को सक्रम रूप से निभाते हैं। ऐसे सामान्य व्यक्ति का प्रेम कितना ही महान होता है। इसी कारण पेटी के अंदर की संपदा केवल वीर को ही दिखायी पड़ी।''

राजा के मौन भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार-सुभद्रा देवी की रचना)

अन्य देशों (इराक) की जनश्रुत कथाएँ

वानर-राजकुमार से मनमोहक राजकुमार

हज़ार साल पहले तक इराक के एक जंगल के सबसे घने हिस्से से एक आश्चर्यजनक गीत सुनाई पड़ता था। अनेक अन्य लोगों के साथ राजा प्रातःकाल अथवा संध्याकाल एक छोटी नदी के किनारे एकत्र हो चुपचाप उस गीत का आनन्द लेता। कहीं गीत गानेवाला उड़ न जाये इसलिए वे नदी के उस पार नहीं जाते थे।

गीत गानेवाला भला कैसे उड़ सकता है? इस प्रसंग में, गानेवाली एक सुनहली चिड़िया थी जो एक सुनहले पेड़ पर रहती थी। आइये, अब हम कथा सूत्र को पकड़ें और पता लगायें कि ऐसा वृक्ष और ऐसी चिड़िया उस जंगल में कैसे आई।

एक समय एक राजा था, जिसके छः रानियाँ थीं और हरेक से एक-एक पुत्र था। इस प्रकार राजा के छः राजकुमार थे। लेकिन एक सातवां भी था। छः राजकुमार महल में पैदा हुए और पले थे जबकि सातवाँ जंगल में पला था।

राजा एक अच्छा शिकारी था और उसे हिरण का मांस पसन्द था - लेकिन सिर्फ उन्हीं हिरणों का जिन्हें वह शिकार अभियान पर स्वयं मारता था। राजा की पाकशाला में काबिल बावर्चियों की कमी नहीं थी लेनिक प्रथा के अनुसार राजा के लिए विशेष पकवान बनाना रानियों का काम

था। रानियाँ बारी-बारी से पकवान बनाती थीं और राजा को यह मालूम नहीं था कि कौन रानी सबसे अच्छा पकवान बनाती है।

''आज मैं एक हिरण मार कर लाऊँगा। उसके मांस को बाँट कर अलग अलग पकाना। मैं जानना चाहता हूँ कि तुममें से कौन सबसे अच्छा भोजन बना सकती है।'' एक सुबह राजा ने रानियों से कहा और जंगल की ओर चल पड़ा।

उसने जंगल के किनारे घोड़े को दूर तक

राजकुमारी ने सुन रखा था कि किसी द्वीप पर एक सुनहले पेड़ पर एक सुनहली चिड़िया रहती है। उसने यह भी सुन रखा था कि उसका गीत सुन लेने पर कोई किसी के प्रति क्रूर नहीं हो सकता। राजकुमारी ने राक्षस से उसी वृक्ष और चिड़िया को लाने को कहा।

राक्षस ने राजकुमारी से कहा कि उसे वृक्ष का स्थान मालूम है लेकिन वहाँ तक जा पाना कठिन है। यदि वह एक वर्ष के अन्दर नहीं लौटे तब राजकुमारी किसी और से विवाह कर सकती है, लेकिन उससे ऐसा शिशु पैदा होगा जिसका मुख वानर का होगा!

बहुत तेजी से दौड़ाया। फिर भी, सूर्यास्त तक उसे कोई हिरण नहीं मिला। लेकिन उसे एक बहुत अप्रत्याशित चीज़ मिल गई। उसने एक उजाड़ महल देखा। उसके अन्दर एक युवती अकेली बैठी थी। राजा ने इससे पहले ऐसी सुन्दर स्त्री कभी नहीं देखी थी।

उस सुन्दरी ने, जो वास्तव में एक राजकुमारी थी, राजा को अपनी आपबीती सुनाई। एक राक्षस ने पाँच वर्ष पूर्व उसके माता-पिता तथा उनके छोटे से राज्य के सब लोगों को मार दिया था। राक्षस ने फिर राजकुमारी से विवाह करना चाहा। लेकिन उसे मिले एक शाप के अनुसार वह किसी मानव-स्त्री से तब तक विवाह नहीं कर सकता था जब तक उसकी एक शर्त पूरी न कर दे।

राजा राजकुमारी से विवाह करने की आकांक्षा को रोक न सका। वह उसे अपने महल में ले आया। दूसरी रानियाँ यह देख कर भौचक रह गईं कि राजा हिरण के बदले दुल्हन ले आये। राजा नई रानी को जितना चाहने लगे, दूसरी रानियाँ उससे उतना ही जलने लगीं। लेकिन जब नई रानी के बन्दर का मुखवाला एक पुत्र पैदा हुआ तो वे फिर प्रसन्न रहने लगीं।

राजा ने इतना अपमानित महसूस किया कि उसने नई रानी को पुनः उसी उजाड़ महल में निर्वासित कर दिया पर साथ ही उसके जीवन को आरामदायक बनाने के लिए सेवकों तथा अन्य सुविधाओं का प्रबन्ध करना वह न भूला।

जंगल के निकट एक महान ऋषि का गुरुकुल विद्यालय था। राजा के छः राजकुमार वहीं विद्याध्ययन कर रहे थे। यद्यपि नई रानी का बेटा

बानर मुख वाला था फिर भी ऋषि ने उसे भी गुरुकुल में विद्याध्ययन के लिए रख लिया, क्योंकि वह भी आखिर राजकुमार ही था। और शीघ्र ही ऋषि को यह देख कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि वह नया राजकुमार अध्ययन में सबसे आगे निकल गया। वास्तव में वह अन्य राजकुमारों से दस गुना अधिक जान गया।

छओ राजकुमारों ने ईर्ष्यावश विद्यालय की कुटिया में आग लगा कर राजा को यह शिकायत कर दी कि बानर राजकुमार ने यह दुष्टता की है। राजा ने आदेश दिया कि बानर राजकुमार को बन्दी बना कर और एक पुरानी अप्रयुक्त नाव में बैठा कर समुद्र में डाल दिया जाये। राजा के आदेश का तुरन्त पालन कर दिया गया।

तभी तुरन्त बाद ऋषि ने राजा के पास आकर यह सूचना दी कि आश्रम जलाने की दुष्टता बानर राजकुमार के सौतेले भाइयों ने की थी!

''बानर राजकुमार को वापस लाओ। उसके साथ बहुत बड़ा अन्याय किया गया है।'' दरबारियों ने गुहार की। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। पुरानी नाव को आँधी समुद्र में बहुत दूर तक बहा ले गई। उत्तेजित दरबारियों ने राजा को उन छओ दुष्ट राजकुमारों को निर्वासित करने के लिए बाध्य किया। जो भी हो, राजा ने उन्हें एक जहाज पर यह सुनिश्चित कर भेजा कि वे कुछ दिनों के पश्चात दरबारियों का क्रोध शान्त होने पर लौट आयेंगे।

संयोगवश पुरानी नाव एक ऐसे टापू पर पहुँची जहाँ छः राजकुमार कुछ देर पहले वहाँ आ चुके थे। वहाँ से दो नदियाँ समुद्र में मिलती थीं - एक का पानी दुधिया रंग का था और दूसरी नदी का रक्त वर्ण। जब छः राजकुमार उस टापू पर पहुँचे तब वहाँ के एक निवासी ने चेतावनी दी कि लाल नदी से जाने पर सर्वनाश होगा।

जैसे ही छः भाइयों ने बानर राजकुमार को देखा, उन्होंने उसे बताया, ''हमें तुम्हें देखकर बड़ी खुशी हुई। हमलोग श्वेत नदी से होकर आये हैं और वहाँ कुछ नहीं हमें मिला। हम तुम्हें लाल नदी से होकर जाने का मौका देते हैं जहाँ तुम्हारी किस्मत खुल सकती है। तुम्हारे वापस आने तक हम तुम्हारा इन्तजार करेंगे।'' लेकिन जैसे ही बानर राजकुमार लाल नदी से जाने लगा, वे अपने घर की ओर चल पड़े।

बानर राजकुमार कठिन लाल धारा के विरुद्ध चलता रहा। शीघ्र ही उसे फुत्कार की भयंकर

आवाज सुनाई पड़ी। कुछ दूरी पर उसने एक पाँच सिरवाले भयंकर सर्प को आग की सांस छोड़ते और सुनहले वृक्ष के चारों ओर चक्कर लगाते देखा। वृक्ष की फुनगी पर एक सुनहली चिड़िया बैठी थी। उसने अपनी माँ से सुनहले वृक्ष और सुनहली चिड़िया के बारे में सुन रखा था। वह अपनी पूरी शक्ति बटोर कर सर्प की पीठ पर कूद गया और उसके सिर को एक-एक कर काटने लगा।

जैसे ही उसका अन्तिम सिर कटा, सुनहरी चिड़िया गाने लगी। और क्या ही वह रोमांचकारी गीत था! जैसे ही चिड़िया ने गाया, बानर राजकुमार मनमोहक राजकुमार में बदल गया।

उस छोटे द्वीप के सभी निवासी चिड़िया का गीत सुनने के लिए और जानने के लिए कि यह कैसे हुआ, वहाँ एकत्र हो गये। उस द्वीप के राजा, रानी और उनकी मधुर बेटी भी आ गई। राजा ने यह घोषणा की थी कि जो भी सर्प को मारेगा वह राजकुमारी से बिवाह करेगा। मनमोहक राजकुमार ने राजकुमारी से बिवाह कर लिया। एक सुसज्जित जलपोत में राजा ने उस दम्पति को उसके अपने मुख्य राज्य में भेज दिया। वह दहेज के रूप में केवल सुनहली चिड़िया के साथ सुनहला वृक्ष अपने साथ ले गया। साथ में वह अपनी पुरानी नाव को भी ले जाना नहीं भूला।

राजा को सहसा अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ, जब उसने देखा कि उसका सातवां बेटा इतना मनमोहक लग रहा है। और न उसे अपने कानों पर विश्वास हुआ जब वह अपने बेटे के साहसिक कारनामों के बारे में सुना।

राजा ने सबसे पहले जंगल के उजाड़ महल से सातवीं रानी को महल में वापस आ जाने का अनुरोध किया। लेकिन उसने आने से इनकार कर दिया। इसलिए राजकुमार ने उस वृक्ष को पक्षी के साथ उसके महल के सामने रोप दिया। वह भी अपनी पत्नी के साथ वहीं रहने लगा।

उसके सौतेले भाई कभी नहीं लौटे। राजा की भी मृत्यु हो गई। राजकुमार अपनी पत्नी और माँ के साथ राजधानी में आ गया और राजगद्दी का उत्तराधिकारी बना। सप्ताह में एक बार वह अपनी पत्नी के साथ सुनहले वृक्ष के निकट जाता और कुछ समय तक सुनहली चिड़िया का गीत सुनता। *(एम.डी)*.

दुल्हिन ने अपना दुल्हा चुना

राम स्वरूप ठाकुर वहाँ का सबसे धनी व्यक्ति था। उसकी पत्नी जब एक बेटी को जन्म देते ही स्वर्ग सिधार गई तब वह शोक सागर में डूब गया। बच्चे की देखभाल में अपना सारा समय लगा कर उसने अपने दुख को भूल जाने की कोशिश की। उसकी बच्ची कुछ वर्षों में एक सुन्दर कन्या के रूप में बड़ी हो गई। वह गाँव की सबसे सुन्दर कन्या थी, इसलिए ठाकुर ने उसका नाम चमेली रखा। उसकी सहेलियाँ अक्सर कहा करती थीं कि वह अपनी पसन्द से शादी करेगी। उसे अपने सौन्दर्य पर गर्व था।

पुराने जमाने में नाई युवकों की जानकारी रखने में सर्वोत्तम व्यक्ति माना जाता था। इसलिए ठाकुर ने गाँव के नाई को बुलाकर चमेली के लिए एक योग्य वर बताने के लिए कहा। नाई ने अनेक युवकों के नाम तथा उनके गुण-अवगुण बताये। ठाकुर ने इस बात पर जोर दिया कि लड़का मध्यम वर्ग का हो लेकिन संस्कार अभिजात वर्ग के हों।

चमेली रसोई घर में उनके भोजन के लिए रोटी बना रही थी। उसने दोनों की बातचीत सुन ली थी। वह बाहर आकर बोली, ''पिता, मैं गाँव के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति से विवाह करूँगी, किसी ऐरे-गैरे से नहीं!''

दोनों, रामस्वरूप तथा नाई, चकित रह गये। उन्होंने ऐसी आशा नहीं की थी कि लड़की इतनी खुल कर अपना विचार बतायेगी, और वह भी अपनी शादी के बारे में। ठाकुर ने पहले अपनी बेटी को कभी नहीं डाँटा था, लेकिन उस दिन उसे फटकारा, ''चमेली, यह ठीक नहीं है कि जवान लड़कियाँ अपनी शादी के बारे में बात करें। यह बड़ों को निश्चय करना चाहिये और इसमें उनकी कोई मर्जी नहीं चलती। मैं ऐसे युवक को देख रहा हूँ जो हमारी मर्यादा की बराबरी का हो।''

चमेली अटल थी। ''पिता, आप की पसन्द के दुल्हे को मैं स्वीकार नहीं करूँगी। यह मेरी

मर्जी पर छोड़ दीजिये। नाई को भला मेरी पसन्द और नापसन्द के बारे में कैसे मालूम हो सकता है?'' फिर वह पाँव पटकती हुई वापस रसोई घर में चली गई।

नाई ने इसे अपना अपमान समझा और ठाकुर से विदा लेकर चला गया। रामस्वरूप स्तब्ध-सा कुछ देर तक वहाँ बैठा रहा। उसने रसोई घर से सिसकियों की आवाज सुनी। इसलिए उसने सोचा कि अब वह अपनी बेटी को इस मामले में कुछ नहीं कहेगा। चमेली शाम होने का इन्तजार करती रही जब वह दिन का काम खत्म करने के बाद एकान्त में अकेली बैठ पायेगी।

रात भर वह एक कार्ययोजना पर विचार करती रही। उसने निश्चय किया कि पिता के जगने से पहले ही एक अच्छे पति के लिए एक शक्ति शाली व्यक्ति की खोज में वह घर से निकल पड़ेगी। उसे उम्मीद थी कि उसे एक ऐसा व्यक्ति मिल जायेगा जिसके साथ घर लौटने से पूर्व वह विवाह कर लेगी।

सुबह होते ही चमेली एक घड़ा लेकर पानी लाने के बहाने घर से निकल पड़ी। लेकिन कुएँ पर घड़ा छोड़ कर जल्दी से मुख्य सड़क पर आ गई। वह एक जुलूस को आते हुए देख कर रुक गई।

जुलूस के निकट आने पर उसने देखा कि एक सजे-सजाये घोड़े पर एक धनी व्यक्ति बैठा हुआ है। कुछ लोग उसके आगे-आगे चल रहे हैं जबकि और अधिक लोग उसके पीछे-पीछे आ रहे हैं तथा सड़क के दोनों ओर खड़े कुछ लोग उसका स्वागत-सम्मान कर रहे हैं।
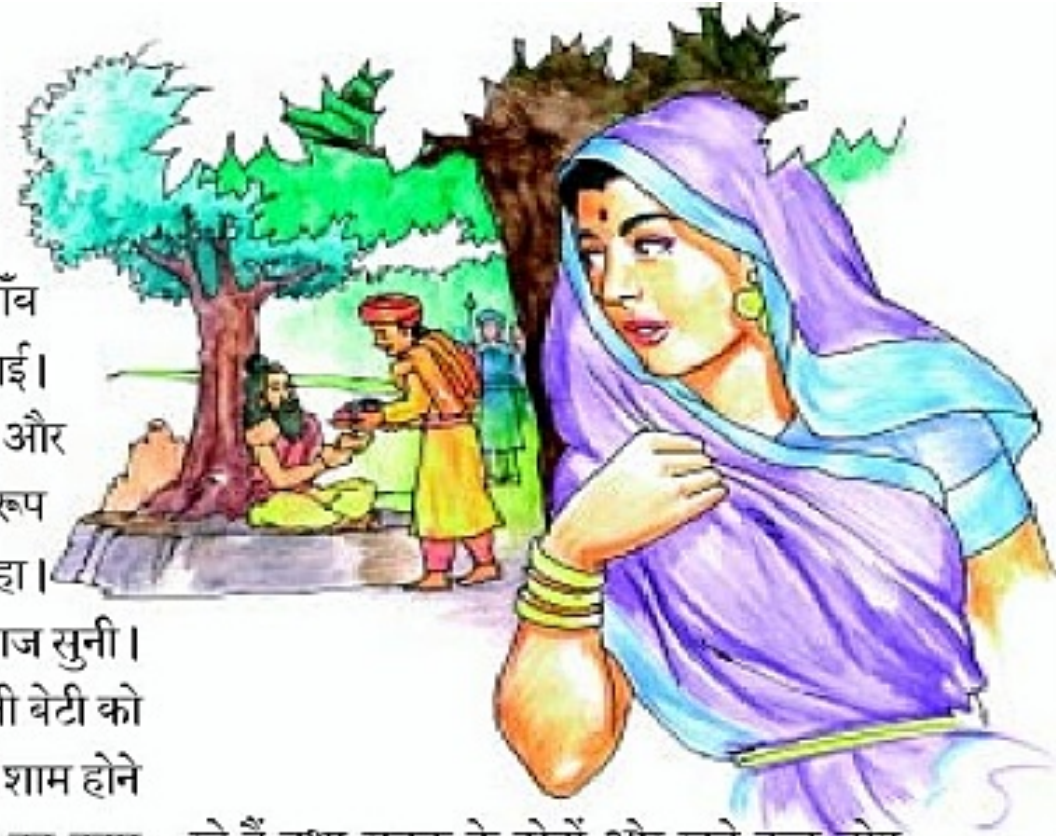
क्या यह व्यक्ति यहाँ का राजा है? उसे आश्चर्य हुआ। उसने कभी किसी राजा को नहीं देखा था इसलिए उसे मालूम नहीं था कि राजा देखने में कैसा लगता है। ''यदि वह वास्तव में राजा ही है तो वह अवश्य ही बहुत शक्तिशाली व्यक्ति होगा।'' चमेली ने सोचा। घुड़सवार सुन्दर और सुगठित था। क्या वह उससे विवाह करेगा?

चमेली ने जुलूस का अनुगमन किया। शीघ्र ही जुलूस एक सरोवर के पास से गुजर कर ठहर गया। घुड़ सवार ने एक पीपल वृक्ष के नीचे एक साधु को देखा। वह भक्तों के बीच बैठा हुआ था, जिनमें से कुछेक उनका आशीर्वाद ले रहे थे। घुड़सवार ने घोड़े से उतर कर साधु को साष्टांग प्रणाम किया। उसके बाद उसने साधु को फल और फूल अर्पित किये और उनका आशीर्वाद लिया। उसकी शोभायात्रा फिर चल पड़ी।

THE ADVENTURES OF
G-man
THE DAILY
THE BIG THIRST
एक बड़ी प्यास
भाग 1
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

TERROLENE
THE MASTER OF DARKNESS
टैरोलीन अंधेरों का बादशाह. दौलतमंद और शक्तिशाली टैरोलीन अपराध और आतंक की दुनिया का बेताज बादशाह है. वह हर नियम को तोड़ने में विश्वास रखता है. वह बच्चों का अपहरण करता है और उनके अंदर की एनर्जी को निकालकर अपने पागलपन को पूरा करने में लगाता है. जानते हैं उसका पागलपन-हमेशा जवान बने रहना.
टैरोलीन के पाइप से निकलती है ऐसी गैस की कोई भी बेहोश हो जाए. पाइप के सिरे पर लगे अनोखे ऐंटीडोट (कवच) के कारण वह इस गैस से बचा रहता है.
टी-टावर...
टैरोलीन का हेड क्वार्टर. इसमें है अत्याधुनिक हथियार घर, न्यूक्लीयर, केमिकल और बायोलॉजिकल हथियारोंवाली प्रयोगशालाएं, यातना गृह और एक ख़तरनाक, अंधेरी काल कोठरी.
टैरोलीन के पास ट्रेनिंग प्राप्त सैनिक, बॉडीगार्ड्स और रोबोमेन्स की विशाल सेना है, जो हमेशा जानलेवा हथियारों के साथ तैयार रहते हैं टैरोलीन के ख़तरनाक इरादों को पूरा करने के लिए.
अपनी इन शैतानी योजनाओं को पूरा करने के लिए वह ड्रग्स बेचता है और खाने-पीने की चीज़ों में मिलावट करके पैसे बनाता है.
इसकी छड़ी में एक छोटा सा टीवी स्क्रीन है जिससे वह अपने पूरे साम्राज्य पर नज़र रखता है.
टैरोलीन के कपड़ों को स्टील और कॉटन के धागों से बुनकर बनाया गया है. इसमें किसी तरह की सिलवटें नहीं पड़ती, यहां तक की परमाणु विस्फ़ोट में भी.
बहुत ही कम लोगों को टैरोलीन के जुड़वा भाई के बारे पता है, इसके बारे में बताने के लिए शायद ही कोई ज़िंदा बचा हो.
कहीं पर तुरंत पहुंचने के लिए टैरोलीन के जूतों में पावरफ़ुल जेट इंजन लगे हुए हैं.
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

SURYARAJ
उस दिन भारतीय सेना की 4 थी रेजिमेंट का जवान लड़ रहा था अपनी आख़िरी जंग,
हिमालय में शत्रुओं पर हमला करने के लिए वह डटा रहा.
इस जंग में सिर्फ़ मेजर सूर्यराज ही ज़िंदा बचा...
अकेला,
घायल,
थका-हारा
और ठंड से ठिठुरता.
उसके पास बचा था बस इमर्जेंसी के लिए रखा हुआ पारले-जी बिस्किट और जीने का हौसला.
अब उसे लड़ना था एक नए शत्रु से . . .
अपने हालातों से.
दो हफ़्ते बाद,
सूर्यराज के बिस्किट ख़त्म हो गएं...
और जीने की उम्मीद भी.
अब वह अपनी अंतिम घड़ियां गिन रहा था.
अचानक एक गोलाकार चक्र (ऑर्ब) प्रकट हुआ
और उसके जड़ शरीर को उसने एक स्पेसक्राफ़्ट को सौंप दिया.
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit www.parleproducts.com

वहां पर मेजर सूर्यराज पर दूसरे ग्रह से आए गोलाकार चक्र (ऑर्ब) ने अनेक तरह के परीक्षण किए.
क्या यह वही है जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने बताया था ?
क्या इसकी आत्मा पवित्र है ?
क्या इसका दिल मज़बूत है ?
क्या यह पृथ्वी पर दुष्टों की तबाही का जवाब होगा ?
क्या यह वही है जो इन महान कार्यों को अंजाम देगा ?
क्या यह अच्छे कामों के लिए लड़ेगा ?
शायद यह वही है...
पर इसके लिए पहले उसे बनना था...
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

G-man
शैतानों का विनाशक
यह है एक महाशक्ति, जिसे पृथ्वी की सुरक्षा के लिए दूसरे ग्रह ने बनाया. एकमात्र शक्ति जो नुक़सान पहुंचानेवाले लालची, क्रूर, निर्दयी व दुष्ट लोगों से ममतामयी धरती मां की रक्षा करती है.
ऑर्ब
आख़िरकार गोलाकार चक्र (ऑर्ब) की सदियों पुरानी खोज ख़त्म हुई. उसे मिला एक नया मकसद-दुष्टात्माओं के ख़िलाफ़ जी-मैन की जंग में उसकी मदद, मार्गदर्शन करना, और हौसला बढ़ाना.
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

जी-मैन अपने हाथ की शक्तिशाली किरणों का उपयोग दूसरों को सुरक्षात्मक कवच देने, दूसरों को बंदी बनाने के लिए करता है, पर किसी को जान से मारने के लिए... कभी नहीं.
किरणों के तीन प्रकार हैं
नीली किरण - तेज
पीली किरण - बहुत तेज
लाल किरण - सबसे तेज
जी-बैंड, जी-मैन को दुनिया में हो रहे अपराधों की सूचना देता है. इस अंतरिक्ष से आए गोलाकार चक्र (ऑर्ब) द्वारा जानकारी मिलती है जो पृथ्वी के चारों ओर अंतरिक्ष कक्ष में घूमता है.
सूर्यराज को अपने चलते-फिरते घर से हमेशा संपर्क में रहना पड़ता है. असल में देखा जाए तो वह एक स्पेसक्राफ्ट है. यह गाड़ी सिग्नल भेज सकती है साथ ही सिग्नल प्राप्त भी कर सकती है.
जी-मैन को ताक़त मिलती है पारले-जी बिस्किट के स्पेशल फ़ॉर्मूले से.
Parle G
और जब वह अपराध से न लड़ रहा हो तब सूर्यराज के रूप में एक स्कूल में पी. टी. टीचर का काम करता है. उसके विद्यार्थी उसे बहुत चाहते हैं, उसकी बड़ी इज़्ज़त करते हैं.
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

कक्षा ५
सुबह ८ बजे
विज्ञान
पानी की तीन अवस्थाएं क्या हैं?
बर्फ़
पानी
भाप
इसी दौरान, धरती के किसी कोने में रसायन विज्ञान की भाषा को चुनौती मिल रही थी।
उच्च दाब...
पिघलती चट्टान...
और जीवाश्म बन गया एक अंजाना विषय...
ये तीनों एक साथ मिलकर...
पानी को देते हैं एक नया रूप...
बर्फ़, पानी, भाप का अस्थायी संगम और एक अंजाना तत्व प्रोटोप्लाज़्मा
तो इसमें कौन सी बड़ी बात है? ये अब भी पानी है, कोई भी बता सकता है...
लेकिन लोग इसे आज पानी कहकर एक भूल कर रहे हैं...
आज से पहले तक
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

एक अप्रत्यक्ष घटना...

जिससे धरती पर मौजूद पानी का पूरा भंडार ज़हरीला बन जाता है।

पानी का यह रूप तेज़ी से फैल रहा है।

धरती के सभी जीव-जंतुओं का जीवन प्रभावित हो रहा है।

The Big Thirst

एक बड़ी प्यास

शहर की प्यास बुझाता पाइप लाइन, जिसमें बहता है पानी...
अब उसमें बह रही है मौत।
मेरी तबीयत ठीक नहीं लग रही।
मेरी भी।
AARGGH
AARGGH
OOMFFP
लक्षणों में शामिल हैः
दौरा, दिल की अनियमित धड़कन, पेट में मरोड़,
उल्टी, बुखार, डायरिया, पसीना छूटना।
इसका अंत शायद मौत है।
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

मेजर सूर्यराज ने हालात का जायज़ा लिया।
तभी तो सोचूं कि आज कोई फुटबॉल खेलने क्यों नहीं आया?
सूर्यराज! आपको देखके बड़ी खुशी हुई। हमें आपकी मदद की ज़रूरत है। हमें वहां चलना चाहिए।
BLIP BLIP
BLIP BLIP
माफ़ करना टीचर! कहीं और किसी को मेरी सख़्त ज़रूरत है।
क्या मैं आपसे अकेले में बात कर सकता हूं मेजर?
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

मेजर सूर्यराज को ऑर्ब हालात से परिचित करवाता है।
लगता है दुनियाभर का पानी किसी अंजानी चीज़ से दूषित हो गया है।
क्या वो बैक्टीरिया है, परजीवी है, या कोई केमिकल या फिर न्यूक्लियर अवशेष ?
सही-सही तो कुछ नहीं कह सकता... दुनियाभर से आए नमूनों की मैं अभी जांच कर रहा हूं।
संक्रमण की सबसे क़रीबी जगह यहां की पानी की टंकी है।
तो अपनी जांच-पड़ताल में यहीं से शुरू करता हूं।
Parle-G
अपनी जांच के बारे में मुझे बताते रहना।
क्या जी-मैन दुनिया को इस तबाही से बचा पाएगा? जानने के लिए अगला अंक देखिए।
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

अब चमेली इस बात पर चकित थी कि क्या वह व्यक्ति, जिसे उसने राजा समझ रखा था, सचमुच शक्तिशाली है, क्योंकि उसने एक मामूली साधु के सामने दण्डवत प्रणाम किया। तब तो स्वयं साधु को ही अधिक शक्तिशाली होना चाहिये। लेकिन क्या साधु विवाह के लिए तैयार होगा? उसे सन्देह हुआ। फिर भी, उसे लगा कि साधु के समान ही कोई अन्य शक्ति शाली व्यक्ति शायद उसे मिल जाये, इसलिए वह कुछ समय तक सरोवर के निकट प्रतीक्षा करती रही।

कुछ देर बाद साधु अकेले रह गये। वे फल-फूल इकट्ठा कर निकट के मन्दिर की ओर जाने लगे। चमेली भी चुपचाप उनके पीछे गई। साधु ने मन्दिर की एक प्रतिमा पर दीप जलाकर सब फल-फूल चढ़ा दिये। फिर उन्होंने बाहर आकर मन्दिर की परिक्रमा की। तत्पश्चात वे चले गये।

अब चमेली को लगा कि मन्दिर के देवता निश्चित रूप से साधु से अधिक शक्तिशाली होंगे।

उसने निश्चय किया कि उस देवता को ही वह पति मान लेगी और विवाहित प्रभु की सेवा करते हुए मन्दिर में ही रहेगी। वह आँखें बन्द कर पद्मासन पर इस आशा से बैठ गई कि देवता मनुष्य के रूप में प्रकट होंगे। उसने जब आँखें खोलीं तो देखा कि एक कुत्ता प्रतिमा पर चढ़ाये गये फल को खा रहा है। क्या देवता ने कुत्ते का रूप ग्रहण कर लिया है?

कुत्ता मटरगश्ती करता हुआ बाहर निकला। शीघ्र ही वह एक घर में घुस गया, जहाँ उसके मालिक ने उसे दुलारा-पुचकारा और कुत्ते ने पूँछ हिलाई और उसके पाँव चाटे। अब चमेली को पूरा विश्वास हो गया कि कुत्ते का वह मालिक कुत्ता-बने देवता से अधिक शक्तिशाली है। वह व्यक्ति जो एक किसान था, बाहर आकर फावड़े से मिट्टी खोदने लगा। चमेली को अचानक याद आया कि उसके पिता मिट्टी के एक टीले की पूजा करते हैं।

वह अब निश्चित रूप से जान गई कि सख्त धरती को जो खोद सकता है, वह सबसे शक्तिशाली होगा। चमेली उसके पास जाकर उसके चरणों में गिर गई। ''आप इस गाँव में सबसे शक्तिशाली व्यक्ति हैं। आप कृपया मुझे पत्नी के रूप में स्वीकार करें। मैं आप की तथा आप की जमीन की देख-रेख करूँगी।''

किसान ने उसकी कहानी सुनी, फिर उसके सुन्दर मुखड़े को देखा और कहा, ''चमेली, मैं तुम्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करता हूँ।''

लाल बहादुर शास्त्री

- बाल्य काल की एक झाँकी

सन् १९६४ में, भारत के दूसरे प्रधानमंत्री के रूप में जवाहर लाल नेहरू के उत्तराधिकारी लाल बहादुर शास्त्री का जन्म एक शताब्दी पूर्व हुआ था। सन् २००४-२००५ का वर्ष साल भर तक चलनेवाले शताब्दी समारोहों का साक्षी रहेगा।

लाल बहादुर शास्त्री का जन्म २ अक्तूबर १९०४ में उत्तर प्रदेश के एक रेलवे नगर मुगल सराय में हुआ था। उन्हें नेहरू मंत्रालय में शामिल किया गया तथा रेलवे व गृह मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण विभागों का दायित्व दिया गया। उन्होंने निर्भीकता, साहसिक कार्यों के प्रति अनुराग, धैर्य, आत्म संयम, शिष्टाचार तथा निःस्वार्थ भावना जैसे सद्गुणों का विकास बचपन में ही कर लिया था।

जब वे केवल १८ महीने के थे, तभी इनके पिता, जो एक अध्यापक थे, का स्वर्गवास हो गया। इसलिए लालन-पालन के लिए इन्हें काशी में अपने चाचा के यहाँ भेज दिया गया, जहाँ उन्होंने हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त की। इन्हें लोग घर पर प्यार से 'नन्हे' कह कर बुलाते थे। स्कूल जाने के लिए इन्हें गरमी की तपती धूप में भी मीलों पैदल चलना पड़ता था।

जब वे केवल ३ महीने के थे, इनके साथ एक बड़ी रोचक घटना घटित हुई। इनकी माँ अपने बच्चे को लेकर गंगा में स्नान करने गईं। स्नान घाट पर भीड़ में माँ की गोद से शिशु फिसल कर एक ग्वाले की टोकरी में गिर पड़ा। ग्वाले के कोई बच्चा नहीं था, इसलिए उसने इसे भगवान की भेंट समझा। जल्दी ही पुलिस ने बच्चे का पता लगा लिया। ग्वाला बच्चे को वापस करते समय फूट-फूट कर रोने लगा।

साहस और आत्म-सम्मान, इन दो सद्गुणों ने इनके बाल्य काल से ही इनके अन्दर जड़ जमा ली थी। काशी में रहते समय एक दिन वे अपने मित्रों के साथ गंगा पार मेला देखने गये। लौटते समय इनके पास नाव के लिए पैसे नहीं थे। आत्म

सम्मान वश उन्होंने मित्रों से पैसे लेना पसन्द नहीं किया। इसलिए वे चुपचाप उनसे अलग हो गये। उनके मित्रों को उनकी अनुपस्थिति का पता न चला और वे नाव पर सवार हो गये। जब नाव चली गई तब लाल बहादुर नदी में कूद पड़े। जबकि इनके दोस्त सांस रोक कर देखते रहे, वे गंगा के दूसरे किनारे पर सुरक्षित आ गये।

यद्यपि लाल बहादुर कद में छोटे थे फिर भी वे असाधारण रूप से बलिष्ठ थे। उनका नैतिक बल और भी दृढ़ था। छः बर्ष की आयु में घटी उनके जीवन की एक घटना ने उनके मन पर एक अमिट छाप छोड़ दी। एक बार वे अपने दोस्तों के साथ किसी के बाग में घुस गये। इनके दोस्त पेड़ों पर चढ़ गये जब कि ये नीचे खड़े रहे। तभी बागवान आ गया और लाल बहादुर को फूल तोड़ते देखा। दूसरे बालक पेड़ों पर से उतर कर भाग गये। माली ने लाल बहादुर को पकड़ कर बहुत पीटा। वे बहुत रोने लगे। माली ने इन्हें पहचान लिया और करुणा से मुस्कुराते हुए कहा, ''क्योंकि तुम अनाथ हो, तुम्हें अच्छा आचरण सीखना चाहिये।'' माली के शब्दों का उन पर गहरा असर पड़ा। उन्होंने शपथ ली, ''मैं भविष्य में अपना व्यवहार बेहतर रखूँगा, क्योंकि मैं अनाथ हूँ।''

लाल बहादुर शास्त्री सन् १९६६ में १० जनवरी को ताशकन्द में भारत-पाकिस्तान के बीच ऐतिहासिक शांति सन्धि पर हस्ताक्षर करने के कुछ घण्टों के बाद घातक हृद्पात के शिकार हो गये। उनका शरीर भारत लाया गया। उनके सम्मान में बिजय घाट नाम का एक स्मारक बनाया गया। उनकी समाधि पर उत्कीर्ण शिला लेख ''जय जवान, जय किसान'' पूर्व प्रधानमंत्री द्वारा ही भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान देश को दिया गया नारा था, जो साथ ही सन् १९६५ में देश में व्याप्त अन्न संकट से उबरने के लिए कृषि को उनके द्वारा दिये गये प्रोत्साहन का अनुस्मारक भी था।
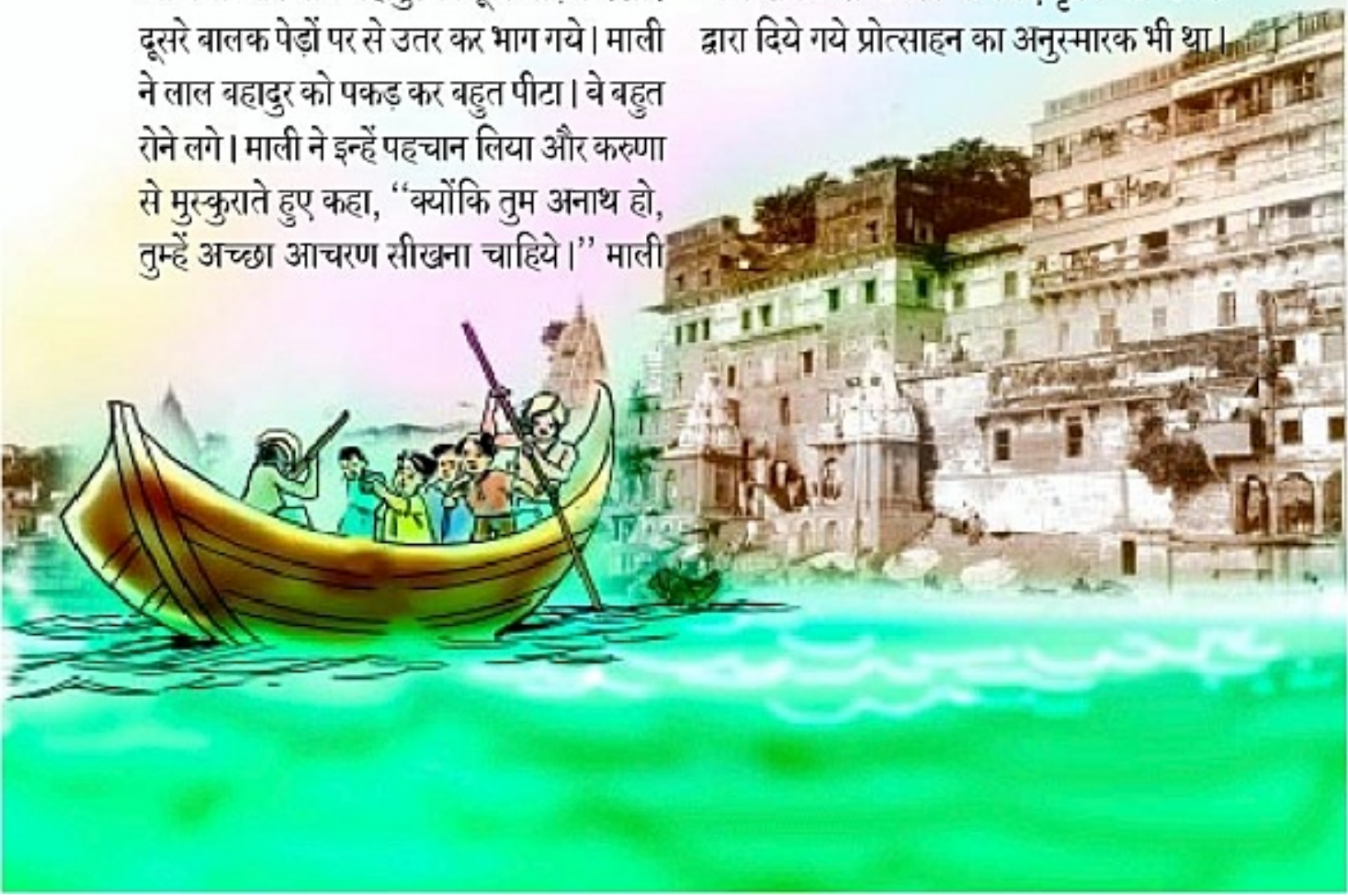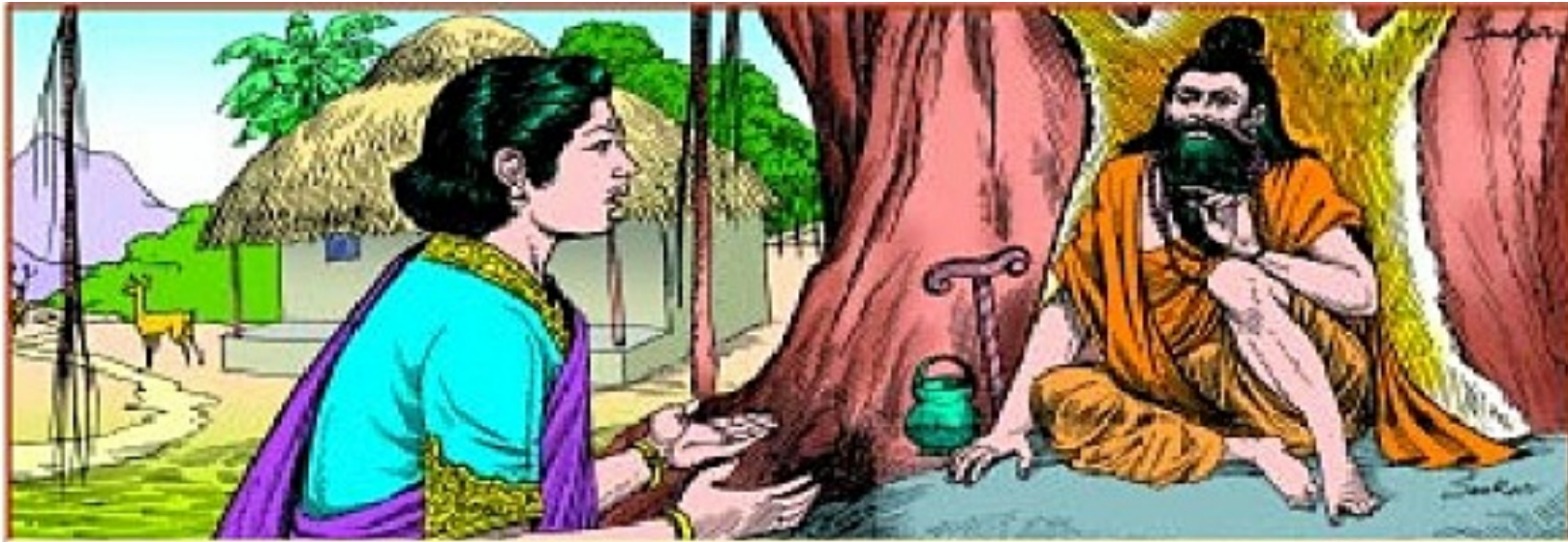
आपसी बैर

प्राचीन काल में काशी राज्य पर राजा ब्रह्मदत्त शासन करते थे। उनके सौ पुत्र थे। सब से छोटा पुत्र संबर था। राजा ने विद्याभ्यास के लिए अपने एक-एक पुत्र को एक-एक गुरु के पास भेजा। छोटे पुत्र संबर को बोधिसत्व के पास भेजा। संबर ने कई वर्षों तक विद्याभ्यास किया और सभी विद्याओं में वह प्रवीण निकला। कई साल बाद राजकुमारों के गुरु अपने शिष्यों को राजा के पास ले गये और बोले, ''महाराज, आप के पुत्र समस्त विद्याओं में पारंगत हो गये हैं।'' इस पर राजा ने प्रसन्न होकर उन गुरुओं का अपूर्व सत्कार किया।

इसके बाद राजा ने अपने पुत्रों को विभिन्न प्रांतों के शासक नियुक्त करके उन्हें राजधानी से बाहर भेज दिया। यह बात मालूम होते ही सब से छोटे पुत्र संबर ने अपने गुरु बोधिसत्व से पूछा, ''गुरुदेव, अगर मेरे पिता मेरे बड़े भाइयों की तरह मुझे भी राज्य के किसी प्रांत का शासक बनाकर जाने को कहें तो मुझे क्या करना चाहिए?''

बोधिसत्व ने समझाया, ''बेटा, अगर तुम्हारे पिता किसी प्रांत का शासक बनाकर भेजना चाहें तो तुम उसे स्वीकार न करो। क्योंकि तुम्हारे सभी बड़े भाई तुम्हारे पिता को छोड़कर एक-एक प्रांत में चले गये हैं। तुम श्रद्धा और भक्ति के साथ उनकी सेवा किया करो! यही तुम्हारा कर्त्तव्य है।''

राजा ब्रह्मदत्त एक दिन बिना सूचना दिये अचानक बोधिसत्व के आश्रम में पहुँचे। संबर अपने पिता को प्रणाम करके अपने गुरु के बगल में जा खड़ा हुआ। राजा ने उससे पूछा, ''बेटा, क्या तुम्हारी शिक्षा समाप्त हो गई है?''

''पिताजी, गुरुदेव की कृपा से मैंने सारी विद्याएँ सीख ली हैं,'' संबर ने जवाब दिया।

''बेटा, मुझे बड़ी खुशी हो रही है, तब तो तुम शासन करने के लिए इस राज्य के किसी भी प्रांत को चुन लो।'' राजा ने कहा।

इसके जवाब में संबर ने कहा, ''पिताजी, मैं

आप का सब से छोटा पुत्र हूँ। यदि मैं राजधानी को छोड़कर कहीं दूर चला जाऊँ तो यहाँ पर आप की देखभाल करनेवाला कौन है? मैं आप की सेवा करते हुए यहीं पर अपना समय बिताना चाहता हूँ।''

यह जवाब सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने संवर की बात मान ली। उस दिन से संवर अपने पिता के पास ही रहने लगा। ज़रूरत पड़ने पर वह बोधिसत्व की सलाह लिया करता था।

एक बार संवर ने बोधिसत्व की सलाह पाकर थोड़ी-सी बंजर भूमि को समतल बनाया। उसमें तरह-तरह के फल और फूल लगवाये। इस तरह उसे एक सुंदर उद्यान वन बनाया।

एक दिन संवर ने अपने पिता की अनुमति लेकर नगर के सभी वर्ण वालों को दावत दी। इसके बाद राज्य के अधिकारियों, घुड़सवार और पैदल सेना को भारी भोज दिया। विदेशों से आने वाले राजदूतों तथा व्यापारियों की सुविधा के लिए सुंदर महल बनवाये। इन कारणों से संवर का यश सारे राज्य में फैल गया।

इस प्रकार कई साल बीत गये। राजा के अंतिम दिन भी निकट आ गये। उन्होंने अपने मंत्रियों को बुलवाकर कहा, ''मेरी मृत्यु के बाद मेरे सौ पुत्रों में से प्रत्येक को गद्दी पर बैठने का हक़ है। मैं अपनी तरफ से किसी को वारिस बनाना नहीं चाहता; इसलिए आप लोग सोच-समझकर किसी योग्य राजकुमार को गद्दी पर बिठाइये।''

राजा की मृत्यु के बाद सभी मंत्रियों ने यह निर्णय किया कि संवर ही योग्य राजकुमार है। तब वैभवपूर्वक उसका राज्याभिषेक किया। उस दिन से संवर अपने गुरु बोधिसत्व की सलाह लेते हुए न्यायपूर्वक शासन करने लगा।

राजा के अनंतर संवर का गद्दी पर बैठना बाकी निन्यानबे राजकुमारों के क्रोध का कारण बना। उन सब ने आपस में चर्चा की और अपनी सेनाओं के साथ क़िले को घेर लिया।

संवर ने यह ख़बर अपने गुरु बोधिसत्व को दी। बोधिसत्व ने उसे समझाया, ''अपने भाइयों के साथ दुश्मनी मोल लेना महान पाप है। इसलिए तुम अपने पिता के राज्य के सौ हिस्से करके अपने बड़े भाइयों में बराबर-बराबर बांट दो।''

संवर ने ऐसा ही किया। उसका यह व्यवहार सब से बड़े भाई उपोसत को अत्यंत आश्चर्यजनक

लगा। उसने अपने छोटे भाइयों से कहा, "हम लोग यह सोचकर उस पर हमला करने आये हैं कि संवर सिंहासन पर अधिकार करके हम लोगों का दुश्मन बन गया है। लेकिन अब उसने न्यायपूर्वक व्यवहार करके सारी जनता की प्रशंसा प्राप्त की है। ऐसे व्यक्ति पर हम लोग हमला कैसे करें?''

''तब तो इस वक़्त हमारा कर्त्तव्य क्या है!'' एक छोटे भाई ने पूछा। ''हमारे छोटे भाई के साथ समझौता करना उत्तम मार्ग मालूम होता है! पिताजी के सिंहासन के लिए हम सब अधिकारी हैं। यह बात सच है, लेकिन हम सब एक साथ इस राज्य के राजा नहीं बन सकते हैं न? इसलिए हम संवर को राजा के रूप में स्वीकार करके अपने हिस्से उसके हाथ में सौंप दें।'' उपोसत ने समझाया।

इस पर सभी ने अपनी सहमति दी। इसके बाद वे सब संवर का जयकार करते अपनी सेनाओं के साथ नगर में पहुँचे। सिंहासन पर बैठे हुए संवर ने अपने सभी बड़े भाइयों का हृदय से स्वागत किया और उन्हें उचित आसनों पर बिठाया।

इसके बाद उपोसत ने संवर से पूछा, ''मेरे प्यारे भाई, तुम्हारा यह धर्मगुण प्रशंसनीय है। सब के साथ ऐसा अच्छा व्यवहार करने की शक्ति तुम्हें कैसे प्राप्त हो गई?''

''भाई, वह शक्ति शायद इस कारण प्राप्त हुई होगी कि मैं मानव मात्र के साथ द्वेष नहीं करता। मैं समय पर सारे परिवार व सैनिकों को पूरे वेतन दे देता हूँ। राजदूत और व्यापारियों का आदर करता हूँ। जनता के हित को मैं अपना हित मानता हूँ।''संवर ने कहा।

इस पर बड़े भाई ने अपने सारे छोटे भाइयों की ओर से संवर को आशीर्वाद दिया और कहा, ''तुम इसी प्रकार धर्म द्वारा शासन करते हुए यशस्वी बनो। तुम इसी लोक में इन्द्र पद का अनुभव करो।'' बोधिसत्व का शिष्य संवर इस प्रकार कई वर्षों तक शासन करता रहा और एक महान राजा के रूप में प्रसिद्ध हुआ।
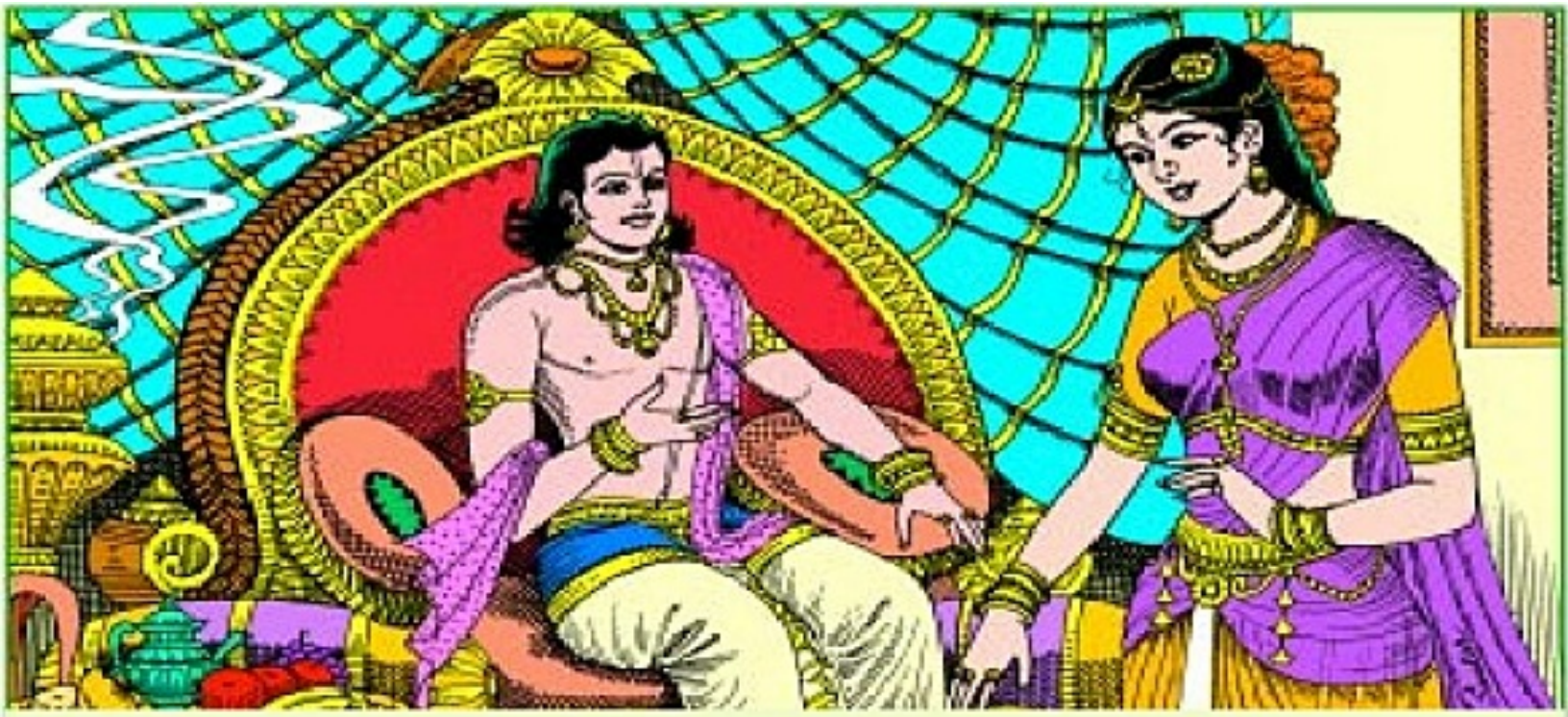
विष्णु पुराण

श्रीरामचंद्र जी ने कोदण्ड की प्रत्यंचा सहज ही चढ़ा दी। इस पर परशुराम बोले– ''हे रघुराम, मैं आज से क्षत्रियों के प्रति अपनी प्रतिकार की भावना को त्याग कर शांतिपूर्वक तपस्या करूँगा। मैंने जो कोदण्ड दिया है, वह आपका ही है। आप कोदण्ड राम हैं।'' यह कह कर परशुराम वहाँ से चले गये।

अयोध्या नगर नव दम्पति के आगमन से शोभायमान हो उठा। सीता और रामचंद्र जी परस्पर अनुराग के साथ जीवन बिताने लगे।

उनके दिन अत्यंत सुखपूर्वक बीत रहे थे। थोड़े दिन बाद दशरथ के सामने अपशकुन दीखने लगे। उल्कापात दिखाई देने लगे। उन्हें वृद्ध मुनि दंपति की बातें याद हो आयीं। प्राण का डर उन्हें सताने लगा।

उन्होंने श्री रामचंद्र जी का राज्याभिषेक करने का निश्चय किया और वसिष्ठ के द्वारा मुहूर्त भी निश्चित करवाया।

उधर सत्यलोक में ब्रह्मा पद्मासन में सच्चिदानन्द में लीन थे। सरस्वती जी वीणा पर रागमाला का आलापन कर रही थीं।

नारद और उनके पीछे देवता संभ्रम के साथ वहाँ आ पहुँचे। नारद ने ब्रह्मा जी से पूछा– ''भगवन! रामचंद्र जी सिंहासन पर बैठेंगे तो राक्षसों का संहार कैसे होगा? यह सोच कर देवता सब परेशान हैं।'' ब्रह्मा ने सरस्वती की ओर दृष्टि दौड़ाई। सरस्वती मंदहास करके बोली, ''जो होना है, सो होकर ही रहेगा। हे नारद, तुम तो त्रिकाल ज्ञानी हो! देखो, कलह पैदा करने में तुम्हारी वारिस बनी मंथरा कैकेयी के महल में जा रही है।''

इस पर देवता और नारद ने नीचे पृथ्वी की ओर देखा। मंथरा अपने कुबड़े को ढोते मन ही मन गुनगुनाते चली जा रही थी।

नारद सरस्वती से बोले, ''हे माता वाग्देवी! न मालूम आप जगत के कल्याण के हेतु मंथरा के मुंह से कैसे बचन प्रकट करवायेंगी! यह सब आपकी कृपा पर ही निर्भर है।'' यों कह कर नारद वहाँ से चल पड़े। उनके पीछे देवता भी चले गए।

कुबड़ी मंथरा कैकेयी के साथ उनके मायके से आयी हुई बूढ़ी दासी थी। वह कैकेयी की ओर सहानुभूति पूर्ण दृष्टि से देख रही थी।

कैकेयी ने मंथरा से पूछा– ''मंथरा, क्या बात है? तुम उदास क्यों खड़ी हो?''

''महारानी जी, क्या बताऊँ? सुनते हैं, कल श्री रामचंद्र जी का राज्याभिषेक होने वाला है! राज्याभिषेक?'' मंथरा ने कहा।

कैकेयी अपने कंठ से मोतियों की माला उतारकर मंथरा के कंठ में पहनाती हुई बोली, ''अरी, तुम कैसी खुश खबरी लाई हो?'' यों कह कर वह आनंद विभोर हो उठी।

मंथरा नाक-भौं सिकोड़ती हुई बोली, ''आप कितनी भोली-भाली हैं!''

''मंथरा, यह तुम क्या कहती हो?'' कैकेयी ने पूछा।

''अगर रामचंद्र जी राजा बन बैठे तो हम और आप दोनों कौसल्या की दासियाँ बन जायेंगी। कोप गृह में चले जाइये। अपने दोनों वर इसी वक्त मांग लीजिए। भरत को जन्म आपने क्यों दिया? क्या रामचंद्र जी के सामने चँवर डुलाने के लिए?'' यों मंथरा ने कैकेयी को उकसाया।

इस पर कैकेयी ने दशरथ से अपने दोनों वर मांग लिये। दशरथ ने कहा, ''अच्छी बात है, तुम जो वर चाहती हो, मांग लो।''

कैकेयी ने कहा, ''एक तो रामचंद्र चौदह बर्ष के लिए बनवास करें। और दूसरा भरत का राज्याभिषेक किया जाये।''

कैकेयी के मुँह से ये बातें सुनते ही दशरथ अपने बाल नोचते हुए शय्या पर गिर पड़े।

''पिताजी की आज्ञा का पालन करना मेरा कर्तव्य है। पिताजी पर यह कलंक कभी नहीं लगना चाहिए कि वे बचन का पालन करने वाले नहीं हैं। रघुवंश में आज तक ऐसी बात नहीं हुई है। और न होनी चाहिए।'' रामचंद्र जी मन ही

मन सोचने लगे। अपने पिताजी के वचन का पालन करने के हेतु रामचंद्र जी बल्कल धारण कर बनबास के लिए तैयार हो गये।

उसी समय लक्ष्मण क्रोध से लाल चेहरा लिए इस तरह आ पहुँचे जैसे नागराज फुत्कार करता हुआ झपटने को तैयार हो। उन्होंने कैकेयी तथा दशरथ का वध करने के लिए तलवार खींच ली। इस पर श्री रामंचद्र ने लक्ष्मण को समझा कर शांत किया। इसके बाद राम के साथ सीता और लक्ष्मण भी वनवास के लिए चल पड़े।

दशरथ ने होश में आने के बाद रामचंद्र के बनबास का समाचार जान कर राम नाम रटते-रटते अपने प्राण त्याग दिये।

उस समय भरत और शत्रुघ्न अपने ननिहाल नंदिग्राम में थे। नंदिग्राम से भरत और शत्रुघ्न ने लौटकर अपने पिता की अंत्येष्ठि क्रियाएँ कीं।

भरत ने अपनी माता का चेहरा तक न देखा। शत्रुघ्न ने मंथरा को पीटना चाहा पर कहीं उसका पता न चला।

भरत बनबास से रामचंद्र जी को लिवा लाने के लिए श्वेत छत्रों के साथ सपरिवार चल पड़े।

रामचंद्र जी ने भरत से कहा, "पिताजी के वचन का पालन करने में हम दोनों की जिम्मेदारी है। तुम मेरे छोटे भाई हो। मेरी बात मानो। तुम अपना राज्याभिषेक करके राज्य पर शासन करो।"

भरत ने अस्वीकार सूचक सिर हिला कर कहा, "मैं राज्य का शासन आप के सेवक के समान कर सकता हूँ, सिंहासन पर आप की पादुकाओं को आसीन कर।" यों कहकर वे राम की पादुकाओं को अपने सर पर उठा कर ले गये।

खर और दूषण नामक राक्षस दंडकारण्य में रावण के प्रतिनिधि थे। उन्होंने विंध्याचल के नीचे की सारी भूमि पर अधिकार कर लिया था। उन्होंने अपने राक्षसों के दलों के साथ घूमते समय जंगल में प्रवेश करते हुए मानवों को देखा।

भूखे खूंख्वार जानवरों की तरह भाले और शूलों के साथ इन्होंने सीता, राम और लक्ष्मण को मारने के लिए घेर लिया।

राम और लक्ष्मण ने बाणों का प्रहार करके राक्षस दलों को तितर-बितर कर दिया। रामचंद्र जी ने खर और दूषण का संहार कर डाला। राक्षसों में अधिकांश मर गये, जो बचे सो भाग गये।

राम और लक्ष्मण अपने निवास के लिए उचित

स्थान की खोज में बढ़े जा रहे थे। तभी ताड़ के बराबर एक भयंकर राक्षस सीता जी को अपनी हथेली से उठा कर कंधे पर रख कर भागने लगा। इस पर रामचंद्र जी ने एक महान अस्त्र का प्रयोग करके उसको मार डाला।

बचे हुए राक्षसों ने तत्काल दौड़ते जाकर शूर्पणखा को खर और दूषण की मृत्यु का समाचार सुनाया।

शूर्पणखा, रावणासुर की बहन थी। खर और दूषण शूर्पणखा के सहोदर भाई थे।

दण्डकारण्य में घूमने वाले राक्षसों की शूर्पणखा अधिनायिका थी। वह राम-लक्ष्मण का संहार करने के लिए चल पड़ी।

पांच विशाल वट वृक्ष वाले पंचवटी प्रदेश पर रामचंद्र जी, सीता और लक्ष्मण समेत पहुँचे। उस के पास में ही दक्षिणी गंगा कहलाने वाली गोदावरी नदी बह रही थी।

एक सुन्दर पर्णकुटी बना कर रामचंद्र सीता जी के साथ बन विहार करते बनवास करने लगे। लक्ष्मण भाई और भाभी की सेवा करते हुए दिन-रात पर्णशाला की रक्षा करने लगे।

एक दिन शूर्पणखा अट्टहास करती हुई उनके सामने प्रकट हुई। पहले उसने रामचंद्र जी से निवेदन किया कि वे उसका वरण कर लें और अंत में धमकी भी दी। फिर सीताजी का संहार करने के लिए तैयार हो गयी। लक्ष्मण ने उसकी नाक और कान काट कर उसे भगा दिया।

शूर्पणखा ने लंका में जाकर रावणासुर से शिकायत की। सीता जी की सुंदरता की प्रशंसा कर के उसको भड़काया। इसका बदला लेने के लिए मारीच को सोने के हिरण के रूप में भेजा।

सीता उस जादूवाले हिरण को देख मुग्ध हो उठी। रामंचद्र जी ने उस पर बाण चला कर पकड़ने की कोशिश की। बाण की चोट खा कर जादूवाला हिरण मारीच के रूप में बदल गया। और राम के स्वर में 'हे, सीते! हे लक्ष्मण!' चिल्लाते हुए दम तोड़ दिया।

यह आवाज़ सुनकर सीता जी घबरा उठीं। लक्ष्मण ने सीता जी को अनेक प्रकार से समझाया कि रामचंद्र जी को कभी कोई हानि न होगी। यह राक्षसों की माया है। यों लक्ष्मण के समझाने पर भी सीता जी ने एक न सुनी। आखिर सीता जी ने लक्ष्मण को कटु वचन सुनाये। इस पर लक्ष्मण

पर्ण कुटी के सामने तीन रेखाएँ खींच कर और सीता को इसके आगे न जाने की चेतावनी देकर चले गए।

सीता जी अकेली रह गयीं। रावण वृद्ध तपस्वी के वेश में भिक्षा मांगने आया। सीताजी भिक्षा देने के लिए उन तीनों रेखाओं के पार आ गईं। रावण तभी सीता जी को उठा कर ले गया।

राम और लक्ष्मण सीता जी की खोज में चल पड़े। रामचंद्र जी एक साधारण मानव की तरह विलाप करने लगे। उन्हें रास्ते में पंख कटा जटायु पक्षी मिला। उस ने रामचंद्र जी से बताया - ''मैंने सीता जी को छुड़ाने की बड़ी कोशिश की। मेरे पंख काट कर रावण सीता जी को दक्षिण दिशा में ले गया।''

यों कह कर जटायु ने उसी वक्त अपने प्राण त्याग दिये।

दशरथ के अनन्य मित्र जटायु की अंत्येष्टि क्रियाएँ करके राम और लक्ष्मण आगे बढ़े। तब कबंध ने अपने लंबे हाथों से जंगली जानवरों के साथ राम और लक्ष्मण को भी अपने समीप खींच लिया।

कबंध एक विचित्र प्रकार का प्राणी था। उसका पर्वत जैसा पेट, उसी में लंबे जबड़ों के साथ खुला हुआ मुँह, अग्निकण जैसी एक आँख और कई योजनों की दूरी तक प्रसार करने वाले हाथ थे। उसके कोई शिर, पैर अथवा और कोई अंग न था।

राम और लक्ष्मण ने तलवार खींच कर कबंध

के हाथ काट डाले। कबंध शाप का शिकार हुआ एक गंधर्व था। वह शाप से मुक्त हो कर गंधर्व लोक में जाते हुए बोला, ''वानरों के साथ आप की मैत्री होगी, उसका फल लाभदायक होगा।''

ऋष्य मूक पर्वत पर वानर वीरों के साथ बसने वाले सुग्रीव ने रामचंद्र जी के पास हनुमान को भेजा।

ब्रह्मा ने एक बार कभी हनुमान को विचित्र प्रकार के कर्ण कुण्डल दे कर समझाया था- ''इन कुण्डलों को जो व्यक्ति पहचान कर प्रशंसा करेंगे उन्हीं को तुम विष्णु समझ कर अपने आराध्य देवता के रूप में उनकी सेवा करना।''

सुग्रीव के आदेश पर हनुमान ब्रह्मचारी के रूप में रामचंद्र जी के पास पहुँचे। रामचंद्र जी ने हनुमान को देखते ही लक्ष्मण से कहा-''देखते हो न, सुंदर आकृति वाले इसके कर्ण-कुण्डल कैसे अनोखे लगते हैं।'' हनुमान विष्णु के अवतार को पहचान कर उनके विश्वास पात्र सेवक बने। रामचंद्र के द्वारा सुंदर कहलाने वाले हनुमान सचमुच सुंदर कहलाए।

हनुमान के कारण सुग्रीव और रामचंद्र जी अग्नि को साक्षी बना कर मित्र बन गए।

सुग्रीव के भाई बाली किष्किन्धा के राजा थे। अपने छोटे भाई को गलतफहमी के कारण द्रोही मान कर बाली उन्हें मारने के लिए दौड़े। इस पर सुग्रीव ने भाग कर ऋष्यमूक पर्वत की शरण ली। बाली ने उसकी पत्नी को क़ैद में रखा।

विपदा में रहनेवाले अपने मित्र की रक्षा करना अपना कर्तव्य समझकर रामचंद्र जी ने सुग्रीव को वचन दिया कि वे बाली का वध करके उसको किष्किन्धा का राजा बनायेंगे।

बाली को यह वरदान प्राप्त था कि उसके सामने जो भी खड़ा होगा, उसकी आधी शक्ति बाली के अंदर आ जाएगी।

इस कारण रामंचद्र जी को भी बाली का वध करने के लिए पेड़ की ओट से छिप कर बाण चलाना पड़ा। एक दिन जब बाली और सुग्रीव लड़ रहे थे, तब रामचंद्र ने अपने मित्र सुग्रीव की रक्षा के लिए बाली का संहार कर दिया।

(क्रमशः)

सपने जो सच होते हैं

अब्दुल बगदाद का रहनेवाला एक गरीब आदमी था। लगता था कि उसे कभी कोई काम नहीं मिला, इसलिए वह अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए काफी पैसे कभी न कमा सका। उसकी बीवी और बच्चे अक्सर भूखे सो जाते। बेचारा अब्दुल! उसे इसके लिए भारी कीमत चुकानी पड़ती, क्योंकि उसकी बीवी उसे हमेशा याद दिलाती रहती कि वह अपने परिवार के प्रति कर्त्तव्य पालन में नाकामयाब रहा है।

"तुम कायर हो।" वह गुस्से में डाँटती, "तुम्हें हमारी परवाह नहीं है। तुम्हारा दिल हमारे लिए धड़कता नहीं। भगवान तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा।" इस तरह बेचारा अब्दुल, जो पहले से ही भूखा, उदास और परेशान होता, और भी दुखी हो जाता।

मानो भूख और बीवी का उत्पीड़न काफी न था, उसे हर रात एक और यन्त्रणा से गुजरना पड़ता। एक विचित्र भयावना सपना! हर रात वह देखता। वही एक सपना! वह देखता कि वह एक बड़े रेगिस्तान में अकेला जा रहा है। जब भी वह आराम के लिए रुकना चाहता तो कठोर आवाज में कोई चिल्ला कर कहता, "चलते जाओ, चलते जाओ काहिरा की ओर! तुम्हारी किस्मत वहीं खुलेगी।" यात्रा कष्टपूर्ण थी और आवाज कठोर थी। बेचारा अब्दुल काँपता हुआ नींद से हड़बड़ा कर उठ जाता।
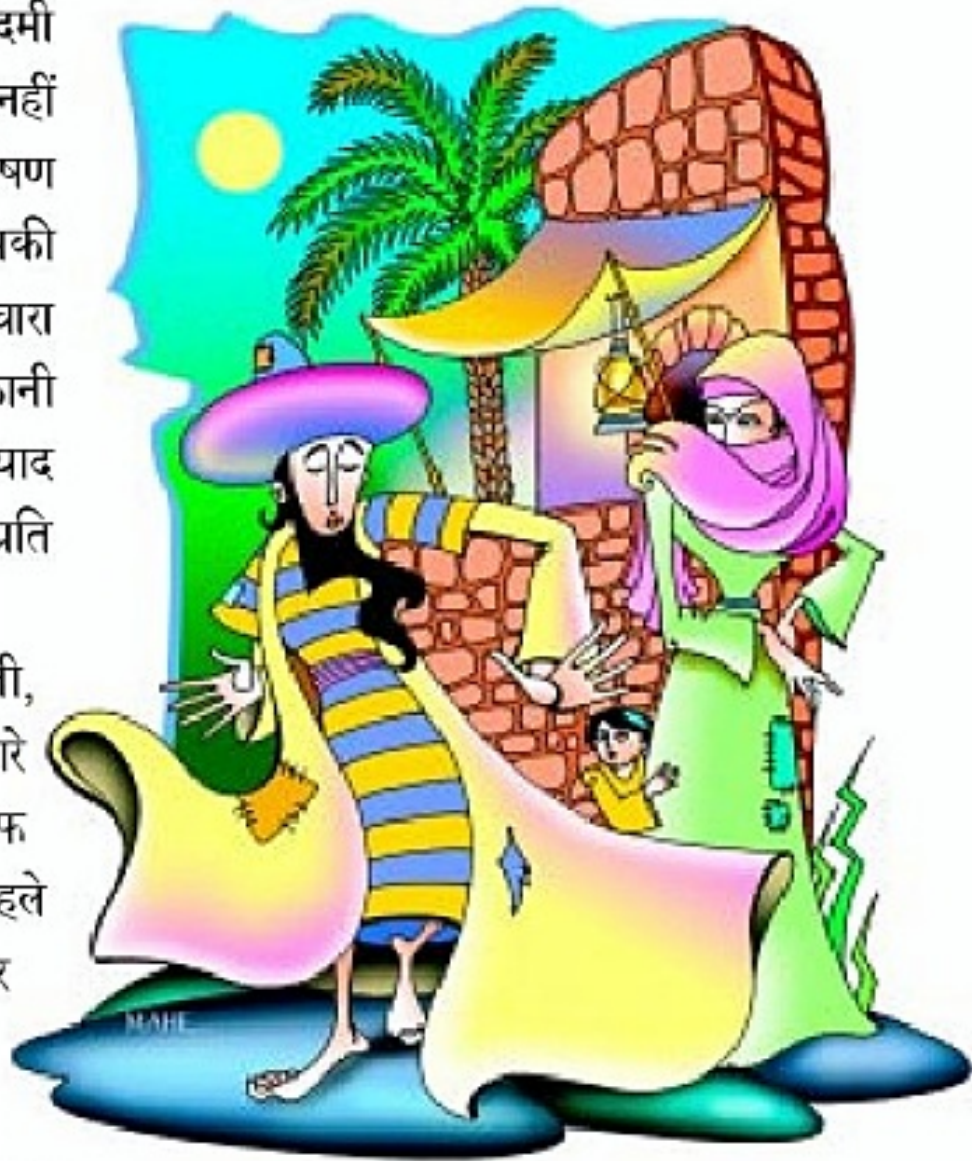
वह अक्सर आश्चर्यपूर्वक सोचता कि क्या उसे सचमुच उस विचित्र आवाज के कथनानुसार काहिरा जाना चाहिये! लेकिन जब वह अपनी बीवी के साथ विचार विमर्श करने की कोशिश करता , तब वह और भी चीखने-चिल्लाने लगती,
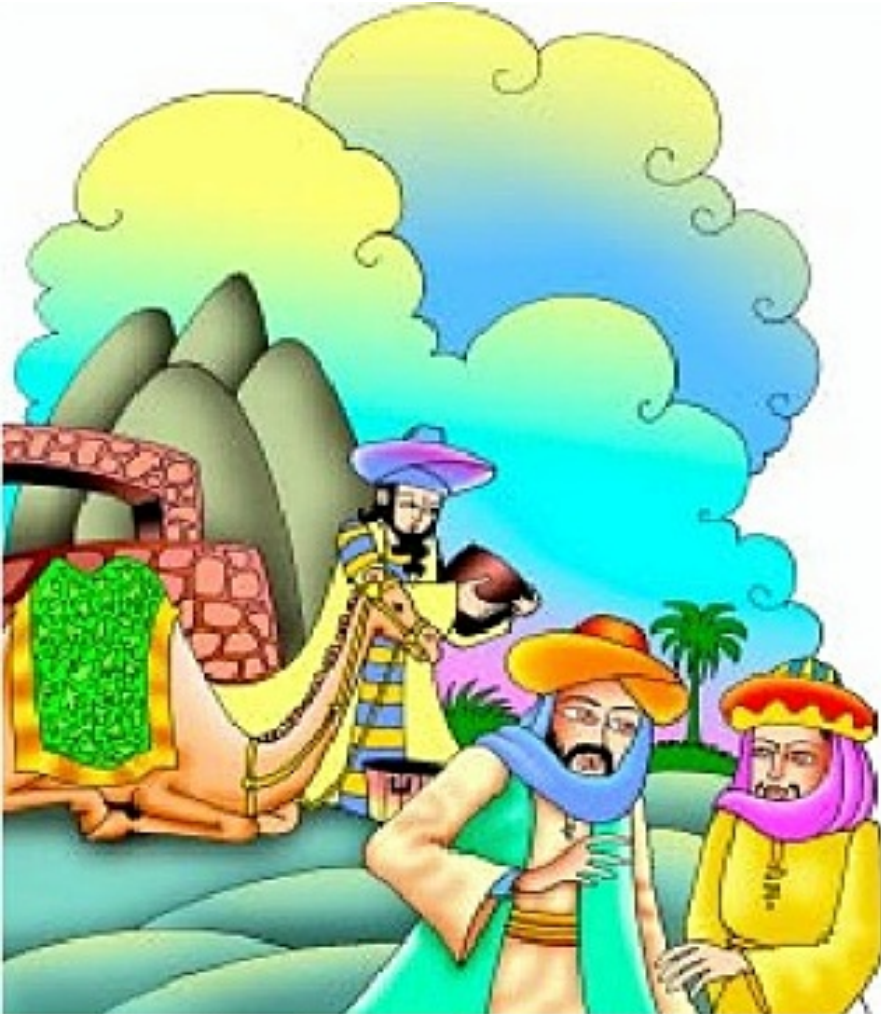
''ओह, तो तुम काहिरा जा रहे हो! तुम हमलोगों की परेशानी से भागना चाहते हो, जहाँ हम तुम्हें पकड़ नहीं सकें।''

कभी-कभी अब्दुल सुबह-सुबह बगदाद शहर की सीमा पर पुराने कूप के पास बैठ कर कुछ समय बिताता। यहाँ पर पानी के लिए बगदाद जानेवाला काफिला रुकता था। अब्दुल कारवां के व्यापारियों के लिए थोड़ा-बहुत छिट-पुट काम कर देता था जिससे उसे कुछ दिनार मिल जाते थे।

एक दिन जब वह कुएँ पर बैठा अपने भयावने सपने के बारे में सोच रहा था, तभी वहाँ एक लम्बा कारवां आ पहुँचा। अब्दुल उनके लिए पानी निकालने और ऊँटों को खाना खिलाने में व्यस्त हो गया। जब वह कुएँ से पानी निकाल रहा था, उसने दो आदमियों की बातचीत सुनी।

''सिर्फ दो दिनों में हम काहिरा पहुँच जायेंगे'', एक ने कहा।

''मुझे भी यही उम्मीद है,'' दूसरे ने कहा। ''मैं इस लम्बी यात्रा से बहुत थक चुका हूँ।''

काहिरा! उसके सपनों का शहर! उसने अपने कान खड़े कर लिये। हो सकता है, वह भी चल पड़े। उसने उन दो आदमियों से उसे भी साथ में काहिरा ले जाने के लिए अनुरोध किया। वे राजी हो गये। अब्दुल ने अपनी पगड़ी से चेहरा ढक लिया ताकि उसकी बीवी की काफिले पर नजर पड़ने पर भी उसे पहचान न सके।

काफिला रेगिस्तान की तपती रेत की बगदाद से काहिरा जानेवाली टेढ़ी-मेढ़ी थकाऊ पगडंडियों पर चल पड़ा। काहिरा के फाटक पर पहुँचते ही कारवाँ तितर-बितर हो गया और हर व्यापारी ने अपना-अपना रास्ता पकड़ लिया। अब्दुल खड़ा - खड़ा अपने दोस्तों को ठसाठस भीड़ में खोते हुए देखता रहा। वह थका-मांदा, भूखा और फटीचर बना हुआ था। वह एक खजूर के पेड़ के नीचे बैठ गया और तुरन्त उसकी आँखें लग गईं।

शाम हो रही थी कि तभी उसे किसी ने झकझोर कर उठा दिया। कुछ उजड्ड हाथ उसके पैरों को घसीट रहे थे। ''एक नया भिखारी आ गया! कहाँ से आये तुम?'' किसी ने पूछा। अब्दुल ने समझाने की कोशिश की कि वह भिखारी नहीं है, लेकिन आदमियों ने उसकी एक न सुनी। उसके चीखने-चिल्लाने और विरोध करने के बावजूद उसे घसीट कर जेल में ठूँस दिया गया।

उस रात को बहुत वर्षों में पहली बार अब्दुल को वह डरावना सपना नहीं आया। दूसरे दिन उसे न्यायाधीश के पास पेश किया गया।

"एक और भिखारी! नया भी है!" न्यायाधीश त्योरी चढ़ाता हुआ बोला, "क्या तुम्हें नहीं मालूम कि काहिरा में भीख मांगना अपराध है?"

"मैं भिखारी नहीं हूँ", अब्दुल बुदबुदाया। "मैं बगदाद से इतनी दूर अपने भाग्य को ढूँढने आया हूँ।"

"यहाँ बहुत लोग अपनी किस्मत की तलाश करने आते हैं," नर्म होते हुए जज ने कहा, "किन्तु, वे निराश हो अपना प्रयास छोड़ चले जाते हैं। लेकिन तुम तो अपना भाग्य बगदाद में आजमा सकते थे, काहिरा क्यों आये?"

यद्यपि अब्दुल परेशान, थकामांदा, भूखा और निराश था, फिर भी उसने जज को अपने दिल की बात सच-सच बता दी। उसने उसे अपने विचित्र सपने के बारे में बता दिया।

जज उसकी कहानी सुन कर ठठा कर हँसा। "तुम सपने की वजह से यहाँ आये हो?" वह चिल्ला कर बोला। "तुम निरे बेवकूफ हो! बगदाद से काहिरा की यात्रा कितनी मुश्किलों और खतरों से भरी है, इसमें तुम्हारी जान जा सकती थी! सपने को भूल जाओ और बगदाद जाकर कोई काम करो जिससे तुम्हारी रोजी-रोटी चले।"

जज ने अपनी रेशमी थैली से कुछ दिनार निकाले और अब्दुल की ओर बढ़ाते हुए कहा, "मेरे दोस्त, ऐसी गलती फिर कभी न करना। सपनों में कभी विश्वास न करना। वे कभी सच नहीं होते। जानते हो, मैं भी एक ऐसा ही सपना देखता हूँ...हर रात। लेकिन मैं मूर्ख नहीं हूँ। यदि मैं विश्वास कर लेता तो इस शानदार नौकरी को छोड़ कर बगदाद चला गया होता!"

अब्दुल ने जज को घूर कर देखा। क्या? यह आदमी भी खजाने के बारे में सपने देखता है? "आप सपने में क्या देखते हैं हुजूर आला?" उसने उत्सुक होकर पूछा।

"तुम्हारी तरह हर रात एक विचित्र आवाज कहती है, "बगदाद के पूर्वी सीमान्त पर पुराने महल के खंडहर में जाओ। वहाँ पुराने कुएं के पास तुम्हें एक शिथिल पत्थर मिलेगा। इसे हटा कर गहरा खोदो और वहाँ तुम्हें खजाना मिलेगा!"

अब्दुल के मुँह से आह निकल गई। उसने जज को शुक्रिया अदा की और बड़े उत्साह के साथ बगदाद की ओर चल पड़ा। इस बार उसे ले जाने के लिए कोई काफिला नहीं था। लेकिन उसने इसकी परवाह नहीं की। तपते सूरज की गर्मी और ठण्ढी रात उसकी हिम्मत को तोड़ न सकी।

अन्त में वह बगदाद वापस पहुँच गया। फिर वह उस महानगर के पूर्वी छोर पर आया। वहाँ, जैसा कि जज ने कहा था, एक पुराने महल का भग्नावशेष था। वह उसके अन्दर घुसा जहाँ एक पुराना कुआँ था। थोड़ी - बहुत खोज-बीन के बाद उसे एक मुक्त पत्थर भी मिल गया। उसने उसे खिसका दिया और वहीं से एक पुरानी छड़ी उठा कर उससे वहाँ खोदने लगा।

जल्दी ही उसे कुछ सख्त चीज से टकराने की आवाज आई। उसने उसे ऊपर निकाला। यह बकरे की खाल का बहुत बड़ा थैला था। उत्तेजना और उम्मीद से काँपता हुआ उसने उसे खोला - और आश्चर्यों का आश्चर्य! उसमें लाल, हीरे, अन्य मूल्यवान रत्न, सोना और चाँदी के आभूषण भरे पड़े थे....! उसका खजाना!

अब्दुल थैले को काँख में दबा कर घर की ओर चल पड़ा। उसकी बीवी ने दरवाजा खोला और अब्दुल को घूरते हुए देखा। उसकी भौंहें तन गईं और उसके होंठ नफरत से मानो कुंडलित हो गये।

''क्या घर वापस आ गये? कहाँ भाग गये थे? काहिरा में खजाना मिल गया?'' वह घिनौने ढंग से सवाल करने लगी।

''हाँ'', अब्दुल ने जवाब दिया। उसकी आँखें सितारों की तरह चमक रही थीं। अपनी बीवी के तीखे शब्द बाण से इस बार वह आहत नहीं हुआ। उसने थैला खोला। चमचमाते रत्न और आभूषण उसकी बीवी को मानों आँखें मार रहे थे।

वह स्तंभित रह गई। उसे समझ में नहीं आया कि क्या बोले। उसके बारे में यह कहा जाता है कि वह तब से आजीवन गूंगी हो गई। और अब्दुल शान्ति और समृद्धि के साथ आनन्दपूर्वक जीवन बिताने लगा।

चन्दामामा

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ोः

वृद्ध जगन्नाथ का बेटा और बहू एक महामारी में गुजर गये। दो पोतों के लालन-पालन का भार उस पर आ गया। वह चाहता था कि वे बड़े होकर शालीन युवक बनें। उसने अपने मित्र जगमोहन से सलाह माँगी। उसके मित्र ने जगन्नाथ से कहा, "मुझे उनसे बात कर लेने दो।" उसने लड़कों को बुलाया। "मेरे प्रश्न का उत्तर देने से पहले खूब सोच लो", उसने लड़कों से कहा। "यदि भगवान तुम्हारे सामने प्रकट हो जायें और पूछें कि तुम्हें एक खुशहाल जिन्दगी जीने के लिए क्या वरदान चाहिये, तो तुम क्या कहोगे?"

लड़कों ने उत्तर दे दिये। जगमोहन अपने मित्र की ओर मुड़ कर बोला, "तुमने उनके उत्तर सुन लिये न? जब समय आ जाये तब अपना घर और खेत बड़े पोते को दे देना। छोटे पोते की चिन्ता न करना। वह जहाँ भी जायेगा, फलेगा-फूलेगा।"

अपनी प्रतिक्रिया देने से पूर्व, निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार कर लेनाः

* तुम्हारे विचार से पोतों ने क्या उत्तर दिया होगा?
* जगमोहन द्वारा जगन्नाथ को दी गई सलाह का आधार क्या था?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में दो। साथ में एक उपयुक्त शीर्षक भी दो। अपनी प्रविष्टि निम्नलिखित कूपन के साथ एक लिफाफे में भेजो जिस पर अंकित हो- "पढ़ो और प्रतिक्रिया दो।"

अन्तिम तिथिः ३१ दिसम्बर २००४

नाम --उम्र-----------जन्मतिथि----------------------

विद्यालय --कक्षा-----------

घर का पता---

--पिनकोड--------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर प्रतियोगी के हस्ताक्षर

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

वात्सल्य

एक गाँव में एक किसान था।उसका लड़का मोहन बड़ा सुस्त व आवारा था। वह अपने पिता के काम में बिलकुल मदद नहीं देता था। पिता ने उसे गाँव की पाठशाला में भेज कर पढ़ाने की बहुत कोशिश की। पर पढ़ने में मोहन का मन नहीं लगा। पाठ याद नहीं करने पर गुरु जी ने उसे एक-दो बार डाँटा और पीटा। इसलिए उसने पाठशाला जाना बन्द कर दिया। और इधर-उधर घूमने और आवारागर्दी में समय गंवाने लगा। पिता को लड़के के आवारेपन पर बड़ी चिंता हुई। उसने लड़के को सुधारने के लिए डराया, धमकाया और समझाया। लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ।

मोहन जवान हो गया। पिता ने यह सोचकर उसकी शादी कर दी कि परिवार की जिम्मेदारी के सर पर आने से वह सुधर जायेगा। शादी के होते ही मोहन ने अपने पिता से पूछा, ''पिताजी, मेरी जायदाद बांट कर दे दो। मैं अपनी ज़िंदगी आप जीऊँगा।''

पिता ने अचरज में आकर कहा, ''तुम्हें इस घर में रहने में तक़लीफ़ ही क्या है! घर से अलग जाने को तुम से किसने बताया? तुम अपनी शक्ति के अनुसार थोड़ा-बहुत कमाकर मेरी आँखों के ही सामने रहोगे तो मुझे बड़ी खुशी होगी। तुमने अपनी जिन्दगी में कभी काम नहीं किया। अकेले रहने में मुसीबत में फँस जाओगे। तुम्हें जीवन का कोई अनुभव नहीं है। कुछ पढ़े-लिखे भी नहीं हो। काम करने की आदत नहीं है। इसलिए तुम्हारी भलाई इसी में है कि मेरी देख-रेख में काम करना सीख लो। फिर, मेरी सारी जायदाद तो तुम्हारी ही है। तुम्हारे और बहू के सिवा हमारा कौन है?'' यह कहते-कहते पिता की आँखों में आँसू छलक गये।

''पिताजी, मुझ पर प्रेम का अभिनय क्यों करते हो? तुम मुझ पर हमेशा नाराज़ होते हो! मुझ पर रत्ती भर भी तुम्हें प्रेम नहीं है। आज तक तुम ने मुझे गालियाँ दीं, पीटा और तंग किया।

अब मैं स्वेच्छा से जीना चाहता हूँ तो अडंगा डालते हो! क्या अब भी मेरा अलग होकर सुखी होना तुम्हें पसंद नहीं है?'' मोहन ने पूछा।

बेटे की इस दो टूक बात से पिता का दिल टूट गया। उसे समझ में नहीं आया, क्या कहे क्या न कहे। थोड़ी देर तक वह मौन हो गया और अन्दर ही अन्दर अपने भाग्य को कोसता रहा। फिर उसने बेटे की बात यह सोच कर मान ली कि कुछ ही दिनों में इसे आटे-दाल का भाव मालूम हो जायेगा और फिर मेरे पास लौट आयेगा। इसलिए निराश होकर उसने कहा,

''सुनो, बेटा! ऐसा कभी मत समझो ! तुम चाहे जहाँ भी रहो, मैं यही चाहूँगा कि तुम सुखी रहो।'' यह कहकर पिता ने अपने बेटे का हिस्सा बांटकर दे दिया। मोहन अपनी ज़ायदाद लेकर पास के एक दूसरे गाँव में चला गया। वहाँ पर मज़ूरी करते अपने दिन काटने लगा।

एक साल बीत गया। मोहन के एक लड़का हुआ। मोहन की तरह उसका लड़का भी काम चोर और पेटू निकला। उसके व्यवहार पर मोहन को बड़ा गुस्सा आता। एक दिन गुस्से में आकर मोहन ने अपने लड़के को पीटा। वह घर से भागकर अपने दादा के गाँव गया और सारी बातें उसे सुनायीं।

दादा अपने पोते को उसी गाँव में अपने एक दोस्त के घर में ले गया। उससे बातें करके अपने पोते को चार दिन तक वहीं रखने का इंतज़ाम किया।

मोहन अपने लड़के को न पाकर घबरा गया! उसने लड़के की बड़ी खोज़ की, लेकिन कहीं उसका पता न चला। मोहन लड़के को खोजते आखिर अपने पिता के पास पहुँचा और पूछा,

"पिताजी, मेरा लड़का घर से भाग गया है। कहीं इधर तो नहीं आया? वह काम-वाम कुछ नहीं करता, आवारा बन गया है। इसलिए गुस्से में आकर मैंने उसे खूब पीटा। मार खाकर वह कहीं भाग गया है। आज तक घर नहीं लौटा।"

"भाग गया तो जाने दो! ऐसे सुस्त लड़के का रहना और न रहना बराबर है। वह थोड़े ही तुम्हारा उद्धार करेगा? तुम चिंता न करो।" मोहन के पिता ने उसे समझाया।

मोहन लाचार होकर दुखी हो घर लौटा। अपने पति को अकेले वापस लौटे देख मोहन की पत्नी रोते-कलपते बोली, "लड़के को पीटने से क्या हुआ? तुमने थोड़े ही उसकी आदतों को बदल दिया? बेचारा न मालूम कहाँ - कहाँ भूखा भटक रहा है?"

इकलौते लड़के को खोने के कारण मोहन ने मारे चिंता के चारपाई पकड़ ली। उसने खाना-पीना छोड़ दिया और रातदिन बेटे की याद में रोने लगा। उसकी पत्नी भी रात-दिन रोती रहती। कई दिनों तक उसने खाना भी नहीं पकाया। घर में मौत का मातम-सा छा गया।

मोहन के पिता को जब यह ख़बर मिली तब वह अपने पोते को साथ ले मोहन के घर आया। मोहन ने लड़के को देखते ही उसे गले लगाया और रोने लगा।

मोहन के पिता ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, "बेटा, पिता का वात्सल्य ऐसा ही होता है! तुमने लड़के को इसलिए पीटा कि वह आवारा बनता जा रहा है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि लड़के पर तुम्हारा प्रेम नहीं है। देखो, चार दिन वह दिखायी न दिया तो तुम कैसे चिंता में घुलकर दुबले हो गये हो? मैं ने भी यह सोचकर तुमको गालियाँ दीं और पीटा, ताकि तुम सुधर जाओ। इसका मतलब यह नहीं कि तुम पर मेरे दिल में प्यार न था। मेरे बहुत-कुछ समझाने पर भी तुमने न माना और घर से अलग हो गये। मुझे कितना दुःख हुआ था, अब तुम समझ सकते हो।"

इसके बाद मोहन अपनी पत्नी और बच्चे के साथ पिता के घर लौट आया। खेती में उसकी मदद करते आराम से दिन बिताने लगा।

18
राजा शान्तिदेव वनवास में ही इस सन्तोष के साथ दम तोड़ देते हैं कि माता के दुलार से वंचित उसका पुत्र मुनि जयानन्द के साथ सुरक्षित है। शिकार अभियान के बहाने गद्दी हड़पनेवाला वीर सिंह जंगल में विद्रोहियों का पता चलाता है। जब उसके आदमी वन्य पशुओं पर आक्रमण करते हैं तब जयानन्द स्थान की पावनता के प्रति उसे ध्यान दिलाते हैं। वीर सिंह तुरन्त वापस लौट जाने के लिए बाध्य हो जाता है। जयानन्द सरदार सुखदेव के पास एक महत्वपूर्ण उद्देश्य से मिलने जाते हैं।
आर्य
अज्ञात राजकुमार
का रहस्य
चित्र :
गाँधी अय्या

वह क्या है, बाबा?
मैंने एक प्रतिमा का अन्तर्दर्शन किया है - एक स्वर्ण प्रतिमा!

जयनगर में एक मन्दिर था, लेकिन वह जर्जर अवस्था में है।
तुम उसकी खुदाई का प्रबन्ध करो।

यदि कुछ मिला तो मैं आप को सूचित करूँगा बाबा !
मैं तुम्हारी सूचना की प्रतीक्षा करूँगा।

जयानन्द तोता मिलि और बाघा के साथ लौट जाते हैं।

कुछ दिनों के पश्चात..
हाँ, महादेव?
सरदार, एक प्रतिमा मिली है - स्वर्ण प्रतिमा!

इसे अभी भी निकाला जा रहा है।
मुनि को उस स्थान पर ले आओ।

सरदार सुखदेव अपने वस्त्र बदल कर बाहर आते हैं।
मैं सावधान रहूँगा।
मैं खुदाई के स्थल पर जा रहा हूँ।

प्रतिमा नारी आकृति में है। यह खंडहर में सुदृढ़ता से दबी हुई है।

सुखदेव दिव्य आकृति के पास श्रद्धा भाव से जाते हैं।

डर है, कहीं यह टूट न जाये!
स्वामी! इसे बाहर निकालना कठिन लग रहा है।
मुनि जी आ रहे हैं। उनकी सलाह लेते हैं।

जयानन्द महादेव और अपने एक शिष्य के साथ पहुँचते हैं।
बाबा, हमलोग पूरी प्रतिमा बाहर नहीं निकाल पा रहे हैं।

जयानन्द प्रतिमा पर दूर से नजर डालते हैं।
मैंने इसी प्रतिमा को अपनी अन्तर्दृष्टि में देखा है। ये कनक दुर्गा हैं।

केवल एक ही व्यक्ति हमारी मदद कर सकता है। यह मन्दिर कभी उसके वंश का था।
गोविन्द, जाओ, आर्य को ले आओ।

हम लोग पहले एक छोटा मन्दिर बनायें और पूजा आरम्भ कर दें। तब तक प्रतिमा सुरक्षित स्थान में रहनी चाहिये।
यदि आप सहमत हों तो मैं इसे अपने महल में रखूँगा, बाबा।

वे आर्य को मार्गरक्षक गोविन्द के साथ आते हुए देखते हैं।
वह कितना सुन्दर है! मजबूत भी है।

मैं राजकुमार को अनेक सप्ताहों के बाद देख रहा हूँ।
वह एक योग्य शासक होगा।
उस प्रतिमा को देखते हो? यह बहुत गहराई में गड़ी हुई है। इसे बाहर निकालने की कोशिश करोगे?
बाबा, आपने मुझे यहाँ बुलाया?
प्रतिमा आसानी से आर्य के हाथ में आ जाती है। कर्मी गण प्रसन्न हो जाते हैं।
जय माता दी!
जय माता दी!
आर्य प्रतिमा के समक्ष हाथ जोड़ कर खड़ा हो जाता है। फिर उसे हिलाता है।
सुखदेव अपने हाथों में श्रद्धा के साथ प्रतिमा को ग्रहण करने के लिए शाल फैलाता है।
आर्य, इसे सुखदेव को दे दो। वह इसे सुरक्षित रखेगा।

सुखदेव, गोविन्द तुम्हारे साथ जायेगा।
खुदाई से कुछ और निकले तब बताना।
महादेव, खुदाई को जारी रखो।
काम खत्म होने पर मैं आकर बता दूँगा।
जयानन्द और आर्य आश्रम लौट आते हैं।
शान्तिपुर में....
तो तुम्हारा कहना है कि जंगलों में कोई विद्रोही नहीं मिला?
जी हाँ, वे राज्य से बाहर चले गये हैं। मेरे जासूसों ने यह खबर...
भेजी है कि एक स्वर्ण-प्रतिमा मिली है...
क्या कहा? स्वर्ण-प्रतिमा?
यह एक देवी की प्रतिमा है?
देव हो या देवी, यदि यह स्वर्ण का है तब इसे हमारे अधिकार में होना चाहिये!
प्रतिमा अभी कहाँ है?
मुझे पता चला है कि यह जय नगर के सरदार के अधिकार में है।
सुखदेव? किसी को भेजकर कहो कि वह उसे समर्पित कर दे।
मैं आज ही सन्देश वाहक भेजता हूँ।
क्रमशः
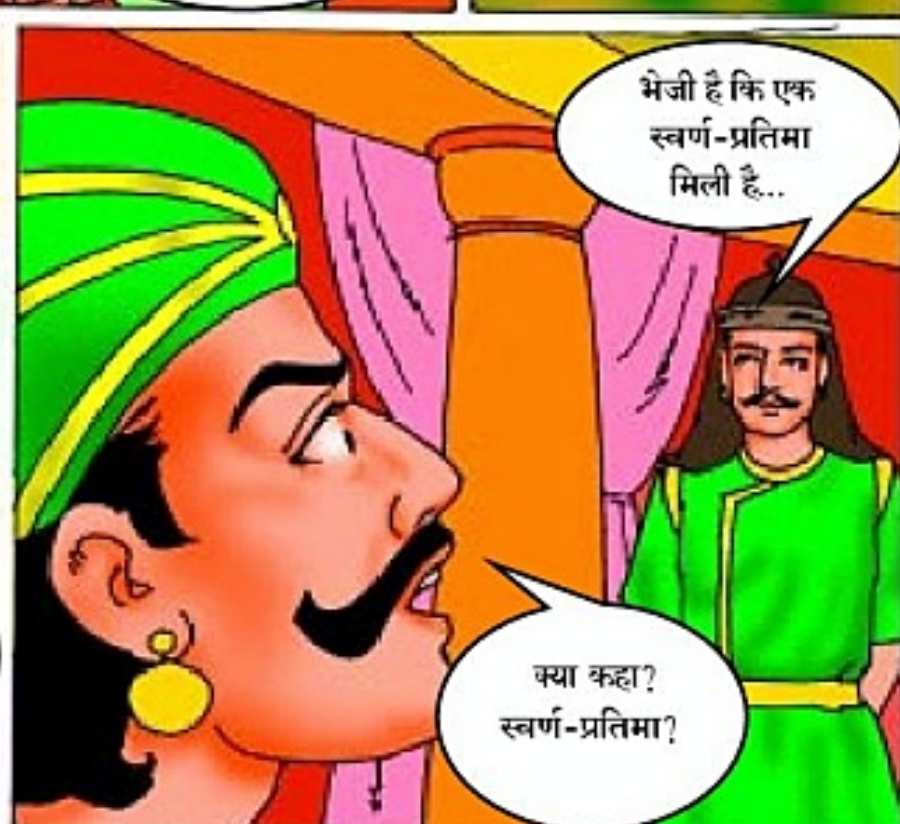
एक राष्ट्रीय मील का पत्थर

भारतीय डाक अब १५० वें वर्ष में

एक सौ पचास वर्ष पूर्व, भारतीय डाक प्रणाली को एक स्वतंत्र संस्था के रूप में पुनर्गठित किया गया और इसे राष्ट्रीय महत्व दिया गया। सन् १८५४ के पोस्ट ऑफिस ऐक्ट द्वारा सरकार को पत्र भेजने का पूर्ण एकाधिकार मिल गया।

अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी ने, जिनके कार्यालय मद्रास, सूरत और कलकत्ता में थे, सन् १६८८ में बम्बई में पहला डाकघर खोला। बाद में मद्रास और कलकत्ता में डाक घर खोले गये। तीन महाप्रान्तीय नगरों को स्थलीय मार्गों से जोड़ा गया जिन्हें रिले-'रनर्स' प्रयोग में लाते थे। प्रथम महाडाकपाल का कार्यालय कलकत्ता में सन् १७७४ में स्थापित किया गया। ये तीनों डाकघर अब व्यक्तिगत पत्रों पर शुल्क लेने लगे। प्रत्येक एक सौ मील पर दो आने (लगभग १३ पैसे) का शुल्क था। यह शुल्क भेजनेवाले को नहीं बल्कि पानेवाले को देना पड़ता था।

सन् १८३७ तक इन तीनों महाप्रान्तों ने अपनी-अपनी डाक-प्रणाली चलाई। सन् १८३७ के डाक अधिनियम ने तीनों सेवाओं को एकीकृत कर दिया। सन् १८५० में तीनों नगरों में महाडाकपाल थे। सन् १८५४ में नये डाक अधिनियम के अन्तर्गत केन्द्रीय डाक प्राधिकरण के एक महानिदेशक का पद निर्मित किया गया। दूरी से निरपेक्ष एक एकरूप (यूनिफॉर्म) डाक शुल्क निर्धारित किया गया। इससे डाक-व्यय-लेबल के मुद्रण की आवश्यकता पड़ी, जो भारत में डाक टिकट के अग्रदूत थे। अब डाक व्यय भेजनेवाले को देना पड़ता था। भारत में प्रयोग में आनेवाला पहला डाकटिकट चार मूल्य वर्गों में निकाला गया- आधा आना, एक आना, दो आने और चार आने।

सन् १८५४ में देश भर में ६५२ डाकघर थे। वर्तमान समय में भारत में दुनिया का सबसे बड़ा डाक-नेटवर्क है जिसमें नगरों के लिए १५५,००० तथा ग्रामों के लिए १४०,००० डाकघर हैं। सन् १९४७ में स्वतंत्र भारत में केवल २३,००० डाकघर थे। सन् २००३ में डाकघरों के द्वारा ९,०००,०००,००० व्यक्तिगत सामान भेजे गये।

भारत हवाई डाक आरम्भ करनेवाला पहला देश था। सन् १९११ में १८ फरवरी को एक फ्रांसिसी नागरिक एम.पिक्वेट लगभग ६५०० पत्रों और पोस्टकार्डों का एक थैला लेकर इलाहाबाद से नैनी तक हवाई जहाज से गया।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

ठण्ढी–ठण्ढी बातें

गर्मी के दिन में शीतल जल अथवा हिम चूर्ण के साथ शरबत के एक गिलास से अधिक स्फूर्तिदायक और क्या हो सकता है?

जल में कुछ असाधारण गुण होते हैं जिनमें से एक यह है कि यह बर्फ़ को शून्य डिग्री सेंटिग्रेड में बदल देता है। फिर भी, प्रवाहित जल इस ताप पर भी नहीं जमता, क्योंकि तेजी से बहने वाले जल में अधिक वायु होती है और यह हिमांक को नीचे ले आती है। इसके अतिरिक्त प्रवाहित जल हिम रवा को बनते समय ही तोड़ देता है। साथ ही, जल का प्रवाह ऊर्जा उत्पन्न करता है जिससे जल की तरलता को बनाये रखने में मदद मिलती है।

जो भी हो, तुमने देखा होगा कि फ्रिज में रखा हुआ पानी भी शीतल तो हो जाता है लेकिन जमता नहीं, हालांकि यह प्रवाहित जल नहीं है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि फ्रिज के अन्दर का ताप नियंत्रित रहता है और शून्य डिग्री तक कभी नहीं पहुँचता। उसी जल को जब फ्रिज के हिमकारी-खाने में रखा जाता है तब वह बर्फ़ बन जाता है, क्योंकि वहाँ का ताप बहुत कम होता है।

धरती का सबसे अधिक खारा सागर

धरती का सबसे खारा सागर 'मृत सागर' (डेड सी) में है। वास्तव में यह एक विशाल झील है जो इजरायल और जॉरडन की सीमाओं पर स्थित है। सामान्य समुद्रों से यह दस गुना अधिक खारा है। जल की अत्यधिक खनिज मात्रा के कारण इसमें आरोग्यकर गुण हैं। जो भी हो, एक यह भी कारण है कि मृत सागर में जीवन नहीं है। वास्तव में मृत सागर के ऊपर कोई पक्षी मंडराता नज़र नहीं आता। यह भी जल में नमक की मात्रा अधिक होने के कारण ही है। झील से जल निकास का कोई मार्ग नहीं है। इसमें अधिकांश जल उत्तर जॉर्डन की नदियों से आता है।

मृत सागर धरती की सतह पर सबसे निचला स्थान है। यह समुद्र तल से १३०० फुट नीचे है। इसके जल में नमक की मात्रा २५ प्रतिशत है। यही कारण है कि कोई भी मृत सागर में आसानी से तैर सकता है।

गर्म जलवायु तथा जल के द्रुत वाष्पीकरण के कारण जॉर्डन की पहाड़ियों पर निरन्तर धुन्ध छाई रहती है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

तन्दुरुस्ती प्याले में

जो कभी चीनी सम्राट शेन नुंग की आकस्मिक खोज थी, वह आज विश्व की द्वितीय सर्वाधिक लोकप्रिय पेय बन गई है; प्रथम स्थान अब भी जल का है। ईसा पूर्व सन् २७३७ में इसकी खोज के समय से ही मानव शरीर और मन पर चाय के लाभदायक प्रभाव को स्वीकार किया गया है।

काली चाय को पूरी तरह किण्वित किया

जाता है, जबकि हरी चाय को हल्का भाप दिया जाता है और सुखाया जाता है। हरी चाय का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए उपयोगी माना जाता है।

आम लोगों में यह भय है कि चाय में मौजूद कैफिन हानिकारक होता है। फिर भी सन्तोष की बात यह है कि एक प्याला चाय में कॉफी की अपेक्षा एक-तिहाई से भी कम कैफिन पाया जाता है।

अपने भारत को जानो

उद्योग-प्रश्नोत्तरी

१. भारत के मसाला मार्ग का आविष्कार किसने किया?
a) मार्को पोलो
b) हुएन-सांग
c) वास्को द गामा
d) क्रिस्टोफर कोलम्बस

२. किस वर्ष बैंक का राष्ट्रीयकरण किया गया?
a) १९५२ b) १९६४
c) १९६९ d) १९७५

३. भारतवर्ष विश्व का निम्नलिखित में से किसका सबसे बड़ा उत्पादक है?
a) सोना b) चावल
c) अबरक d) इस्पात

४. भारत सरकार का सुरक्षा प्रेस (जहाँ करेंसी नोट छापे जाते हैं) कहाँ है?
a) पुणे b) कोलकाता
c) ग्वालियर d) नासिक

(उत्तर ७० पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक
दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

TAJY PRASAD

SOURA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

नवनीत देशमुख,
C/o. श्री.पी.के.देशमुख
बी./५७६, यमुना बिहार, ब्लॉक ४,
एन.टी.पी.सी., पोस्ट-जमनी पाली
कोरबा-पिनः ४९५४५०, छत्तीसगढ

विजयी प्रविष्टि

जल से मैं देता हूँ फूलों में जान
बच्चों का हर-हर गंगा-स्नान

अपने भारत को जानो - उद्योग प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. वास्को द गामा-सन् १४९८ में
२. १९६९
३. अबरक
४. महाराष्ट्र में नासिक

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

CHANDAMAMA (Hindi) DECEMBER 2004
Regd No. TN/PMG(CCR)-594/03-05
Regd. with Registrar of Newspaper for India No. 1087/57
Licensed to post without prepayment No. 381/03-05 Foreign - WPP. No. 382/03-05

जलमार्गों को साफ रखें

वीना के चाचा एक नदी किनारे स्थित एक छोटे से नगर, रामपुर में रहते हैं। नदी उसे हमेशा आकृष्ट करती रही है। जैसे ही वह चाचा के घर पहुँचती है, लगभग तभी वह अपनी चचेरी बहनों तथा अन्य पड़ोसी बच्चों के साथ सीधे नदी की ओर चल पड़ती है।

दो वर्षों के बाद उसके इस भ्रमण ने उसका दिल तोड़ दिया। उसे बताया गया कि नदी अब उछल-कूद के लायक रही नहीं।

उसके चाचा बताते हैं कि रामपुर में एक कपड़ा कारखाना खुलने के बाद नदी का दुर्भाग्य शुरू हो गया। नदी में स्नान करनेवाले चर्मरोग, ददोरा तथा खुजली के शिकार हो गये। नगरवासियों में दमा, घरघराहट तथा फेफड़े के रोगियों की संख्या भी बढ़ गई।

'लेकिन इस खूबसूरत शहर में यह सब कैसे हुआ?'' आतंकित वीना पूछती है।

''कारखाने से निकले गन्दे पदार्थों के नदी में मिल जाने से यह सब हुआ।'' उसके चाचा समझाते हैं। ''जलप्रदूषण बहुत चीज है, बीना।''

''हाँ, सचमुच!'' बीना सहमत होती है। ''यह बताइये चाचा कि हमलोग इसे रोकने के लिए अपनी ओर से क्या कर सकते हैं?''

''हम लोग बहुत कुछ कर सकते हैं, बीना,'' उसके चाचा बताते हैं। ''हमलोग पनालों और बाढ़ के नालों में कूड़ा-कचरा तथा मलबा न जाने दें तथा पानी में, खास कर जमे पानी में कूड़ा न फेंके, क्योंकि ऐसा करने से वह कीटाणुओं व रोगों का प्रसवगृह बन जायेगा! हम अपने जलमार्गों को स्वच्छ रखने का प्रयास करें।''

''आपने हमारे बिचार मंथन के लिए बहुत कुछ दे दिया है, चाचा!'' आँखों में संकल्प की चमक लिये बीना कहती है। अब से मैं निश्चय ही जल-प्रदूषण को रोकने के लिए अपनी ओर से कुछ न कुछ थोड़ा-बहुत करूँगी।''